गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 191
दि. 12.11.2025,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

दिल्ली में लाल किले के पास हुआ धमाका, जांच में नए मोड़

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली में लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास हुआ भीषण धमाका अब एक बड़े 'व्हाइट कॉलर टेरर मॉड्यूल' का चेहरा उजागर करता दिख रहा है। मंगलवार को सामने आए CCTV फुटेज ने जांच को तीन प्रमुख एंगल पर केंद्रित कर दिया है — संदिग्ध डॉक्टर उमर मोहम्मद की गतिविधियां, फरीदाबाद स्थित टेरर नेटवर्क से उसका संबंध, और विस्फोट की रहस्यमयी प्रकृति। पुलिस को शक है कि डॉक्टर उमर ने गिरफ्तारी के डर से जल्दबाज़ी में इस ब्लास्ट को अंजाम दिया। यह धमाका अब देश की सुरक्षा एजेंसियों के लिए एक बड़ी चुनौती बन गया है, क्योंकि इसमें पढ़े-लिखे पेशेवरों की संलिप्तता सामने आ रही है। जांच में अब तक सामने आया है कि उमर मोहम्मद, जो फरीदाबाद की अल फलाह यूनिवर्सिटी से जुड़ा था, पहले से ही एजेंसियों की निगरानी में था। जब उसके नेटवर्क के कई सदस्य पकड़े गए, तो उसने घबराहट में दिल्ली की ओर रुख किया और वहां ब्लास्ट कर दिया। सूत्रों के अनुसार, उमर ने यह कदम अपने साथियों के खिलाफ कार्रवाई के बाद किसी तरह ध्यान भटकाने या अपने निशान मिटाने के लिए उठाया।

CCTV फुटेज में उसे घटना से कुछ घंटे पहले लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास एक सफेद कार के आसपास घूमते हुए देखा गया है। फुटेज के टाइमलाइन से पता चलता है कि दोपहर 3:19 से शाम 6:22 बजे के बीच वह इलाके में कई बार आया-जाया। पुलिस यह जानने की कोशिश कर रही है कि उस दौरान वह किससे मिला, क्या उसने कोई पैकेज छोड़ा या वाहन के पास कोई गतिविधि की।

फरीदाबाद वाले एंगल पर भी एजेंसियों की नजर है। अल फलाह यूनिवर्सिटी के कुछ डॉक्टरों और छात्रों पर पहले से ही शक है कि वे एक स्लीपर सेल का हिस्सा हैं, जिनका संपर्क जम्मू-कश्मीर और केरल के कुछ कट्टरपंथी संगठनों से रहा है। पुलिस यह भी जांच रही है

कि उमर या उसके साथियों ने दिल्ली में खुद रेकी की थी या किसी तीसरे व्यक्ति को इसके लिए लगाया गया था।

सबसे पेचीदा सवाल विस्फोटक की प्रकृति को लेकर है। जांचकर्ताओं के अनुसार, धमाके वाली जगह पर न तो किसी गड्ढे का निशान मिला और न ही कील, छर्रे या ब्लेड जैसी पारंपरिक सामग्रियां। इसका मतलब है कि धमाके में कोई अत्याधुनिक या केमिकल-आधारित विस्फोटक इस्तेमाल किया गया हो सकता है, जो सिर्फ आवाज़ और आग पैदा करे लेकिन पीछे कोई ठोस सबूत न छोड़े। फॉरेंसिक टीम के विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा विस्फोट 'क्लीन टेक्नोलॉजी' बम से किया गया हो सकता है, जिसे आमतौर पर उच्च प्रशिक्षित समूह इस्तेमाल करते हैं।

इधर, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने पुलवामा से डॉक्टर सज्जाद अहमद माला को हिरासत में लिया है, जो आरोपी उमर का करीबी दोस्त बताया जा रहा है। जांच एजेंसियों का कहना है कि सज्जाद अहमद और उमर के बीच हाल के दिनों में कई एन्क्रिप्टेड कॉल्स और संदेशों का आदान-प्रदान हुआ था। यह इस केस में डॉक्टरों से जुड़ा छठा एक्शन है — इससे पहले उत्तर प्रदेश और हरियाणा से भी दो डॉक्टरों को पूछताछ के लिए बुलाया जा चुका है। राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि यह नेटवर्क सिर्फ एक आतंकी साजिश नहीं बल्कि 'शैक्षणिक संस्थानों की आड़ में सक्रिय व्हाइट कॉलर टेररिज्म' का हिस्सा है, जहां शिक्षित वर्ग तकनीकी ज्ञान का दुरुपयोग कर रहा है। दिल्ली पुलिस, एनआईए और इंटेलिजेंस ब्यूरो मिलकर अब इस केस की गहराई से जांच कर रहे हैं। दिल्ली में सुरक्षा एजेंसियों की गतिविधियां बढ़ा दी गई हैं। लाल किला, जामा मस्जिद, इंडिया गेट और प्रमुख मेट्रो स्टेशनों पर सुरक्षाबलों की अतिरिक्त तैनाती की गई है। दिल्ली पुलिस कमिश्नर ने कहा है, "यह घटना हमें याद दिलाती है कि आतंक अब रूप बदल चुका है — वह अब लैब, यूनिवर्सिटी और ऑफिस की दीवारों के भीतर भी पनप सकता है।"

दिल्ली का यह ब्लास्ट अब सिर्फ एक अपराध नहीं, बल्कि एक चेतावनी बन चुका है कि आतंकवाद का चेहरा बदल रहा है — और इस बार उसके पीछे बंदूक नहीं, बल्कि लैब कोट और स्टेथोस्कोप पहने लोग भी हो सकते हैं।

निठारी हत्याकांड का अंत — 19 साल बाद आजाद होगा सुरेंद्र कोली, सुप्रीम कोर्ट ने सभी मामलों में दी बरी

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश को हिला देने वाले नोएडा के निठारी हत्याकांड में मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया। अदालत ने मुख्य आरोपी सुरेंद्र कोली को आखिरी बचे हत्या और रेप केस में भी बरी कर दिया। इस फैसले के साथ 19 साल पुराने इस भयावह मामले का कानूनी अध्याय लगभग खत्म हो गया। कोली को 10 मामलों में फांसी की सजा सुनाई गई थी, लेकिन धीरे-धीरे हर केस में उसके खिलाफ सबूत कमजोर पड़ते गए और आखिरकार सुप्रीम कोर्ट ने कहा — "अब उसे तत्काल रिहा किया जाए।"

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी और फैसला

मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई, जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस विक्रम नाथ की तीन सदस्यीय बेंच ने कहा कि इस मामले में प्रस्तुत किए गए सबूत एकतरफा और अपर्याप्त थे। कोर्ट ने यह भी माना कि दोषसिद्धि का आधार सिर्फ एक बयान और रसोई से बरामद चाकू था, जबकि घटना की अन्य परिस्थितियाँ और साक्ष्य मेल नहीं खाते। अदालत ने कहा — "न्याय केवल सजा देना नहीं, बल्कि निर्दोष को बचाना भी है।"

"गरीब को फंसाकर असली अपराधी को बचाया गया" — बचाव पक्ष का दावा

कोली के वकील युग मोहित चौधरी ने फैसले के बाद कहा कि "यह न्याय की बहुत देर से हुई जीत है।" उन्होंने आरोप लगाया कि असली अपराधी को बचाने के लिए गरीब नौकर को जानबूझकर फंसाया गया।

चौधरी बोले — "इस केस में जो कुछ भी हुआ, वह भारत के न्याय इतिहास पर धब्बा है। सीबीआई ने जानते हुए भी गलत लोगों को फंसाया, क्योंकि अपराध के असली सूत्रधार तक पहुंचने की हिम्मत किसी में नहीं थी। झूठे सबूत, जबरन कुबूलनामे और मीडिया ट्रायल ने इस इंसान को 19 साल जेल में रख दिया।"

न्यायिक सफर का आखिरी पड़ाव — 19 साल, 14 केस, 20 फैसले

कोली पर 2005-06 के दौरान नोएडा के निठारी गांव में हुए दर्जनों बच्चों और महिलाओं की हत्या, बलात्कार और नरभक्षण जैसे संगीन आरोप लगे थे।

- दिसंबर 2006 में नाले से बच्चों के कंकाल मिलने के बाद पुलिस ने व्यापारी मोनिंदर सिंह पंढेर और उसके नौकर सुरेंद्र कोली को गिरफ्तार किया था।
- सीबीआई ने जांच के बाद कुल 16 केस दर्ज किए, जिनमें से 13 में कोली को फांसी की सजा मिली।
- इलाहाबाद हाईकोर्ट ने 2014 और 2017 के बीच इन सज़ाओं में से 12 मामलों में उसे बरी कर दिया, जबकि एक केस में सजा बरकरार रही।
- जनवरी 2015 में दया याचिका पर फैसला आने में देरी के कारण उसकी फांसी की सजा को आजीवन कारावास में बदला गया था।
- अक्टूबर 2023 में हाईकोर्ट ने बाकी मामलों में भी उसे निर्दोष ठहराया, और अब सुप्रीम कोर्ट ने भी अंतिम केस में उसे बरी कर दिया।

क्या था निठारी कांड?

29 दिसंबर 2006 को नोएडा सेक्टर-31 के निठारी गांव में उस वक्त सनसनी फैल गई जब कारोबारी मोनिंदर सिंह पंढेर के बंगले के पीछे एक नाले से 8 बच्चों के कंकाल मिले। बाद में जांच में सामने आया कि इलाके से कई बच्चे और महिलाएं रहस्यमय तरीके से गायब हो रहे थे।

सीबीआई ने जांच में दावा किया था कि पंढेर और उसका नौकर कोली बच्चों को अपने घर बुलाते थे, फिर उनका यौन शोषण कर हत्या करते थे और शवों को नाले में फेंक देते थे। मीडिया ने इसे भारत का सबसे भयावह सीरियल किलिंग केस बताया था।

न्यायिक प्रणाली पर सवाल

निठारी कांड ने देश की जांच एजेंसियों और न्यायिक प्रक्रिया दोनों पर गंभीर सवाल खड़े किए। 19 साल में यह मामला 50 से ज्यादा बार अदालतों में सुना गया, दर्जनों गवाहों के बयान हुए और अंत में सभी मुख्य आरोपी सबूतों के अभाव में बरी कर दिए गए।

डेविड स्ज़ेले बने बुकर पुरस्कार विजेता, उपन्यास 'फ्लेश' ने छुआ प्रवासी जीवन का दर्द और संघर्ष का यथार्थ

(जीएनएस)। लंदन। साहित्य की दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित सम्मानों में से एक बुकर पुरस्कार इस बार ब्रिटिश लेखक डेविड स्ज़ेले को उनके उपन्यास 'फ्लेश' के लिए मिला है। हंगरी में जन्मे और ब्रिटेन में बस चुके स्ज़ेले ने अपनी इस कृति में प्रवासी जीवन की उलझनों, श्रमिक वर्ग की जद्दोजहद और पहचान की तलाश को बेहद मानवीय दृष्टिकोण से उकेरा है। यह उपन्यास आधुनिक समाज में व्यक्ति के अस्तित्व की लड़ाई, प्रेम और अकेलेपन के भावों को एक साथ पिरोता है।

51 वर्षीय स्ज़ेले ने इस सम्मान की दौड़ में ब्रिटिश लेखक एंड्रयू मिलर और भारतीय मूल की लेखिका किरण देसाई सहित पाँच अन्य चर्चित लेखकों को पीछे छोड़ दिया। पुरस्कार के रूप में उन्हें 50,000 पाउंड की राशि दी जाएगी। साहित्य समीक्षकों के अनुसार, 'फ्लेश' वह दुर्लभ उपन्यास है जो अपनी सहजता में गहराई और सादगी में तीव्रता रखता है।

बुकर जूरी के सदस्य और आयरिश लेखक रॉडी डॉयल ने कहा, "डेविड स्ज़ेले की लेखनी जीवन की विसंगतियों को उतनी ही सरलता से दिखाती है जितनी गहराई से वह आत्मा के भीतर झांकती है। 'फ्लेश' एक ऐसा उपन्यास है जो सामान्य जीवन की परतों में छिपे असाधारण को उजागर करता है।" निर्णायक मंडल में रॉडी डॉयल के साथ अभिनेत्री सारा जेसिका पार्कर सहित कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय हस्तियां शामिल थीं, जिन्होंने 153 उपन्यासों में से सर्वसम्मति से 'फ्लेश' को विजेता चुना।

उपन्यास की कहानी इस्तवान नामक पात्र के इर्द-गिर्द घूमती है — एक हंगरी का साधारण युवक जो किशोरावस्था में एक बड़ी उम्र की महिला से अपने पहले प्रेम का अनुभव करता है और फिर ब्रिटेन जाकर नए जीवन की तलाश में संघर्ष करता है। उसका सफर प्रेम, हानि, अस्वीकार और आत्मपहचान की तलाश का प्रतीक बन जाता है। उपन्यास में अप्रवासी जीवन की जटिलताओं और पश्चिमी समाज की वर्गीय सीमाओं को बड़ी बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। डेविड स्ज़ेले ने पुरस्कार स्वीकार करते हुए कहा, "यह कहानी सिर्फ मेरे पात्र इस्तवान की नहीं, बल्कि उन तमाम लोगों की है जो अपने देश छोड़कर नए सपनों की तलाश में निकलते हैं। 'फ्लेश' उनके भीतर के दर्द और उम्मीद की आवाज़ है।"

भारत रत्न, लौह पुरुष

सरदार वल्लभभाई पटेल जी की

150वीं जयंती के उपलक्ष्य में

विश्व प्रसिद्ध स्टैच्यू ऑफ यूनिटी पर पहली बार

एक भारत श्रेष्ठ भारत

को समर्पित एवं

'देखो अपना देश' की पहल के अंतर्गत

भारत पर्व 2025

में (1-15 नवंबर, 2025)

उत्तर प्रदेश की विशेष सांस्कृतिक प्रस्तुति

| मुख्य अतिथि |

योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

| गरिमामयी उपस्थिति |

सतीश महाना

अध्यक्ष, विधानसभा, उत्तर प्रदेश

केशव प्रसाद मौर्य
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

जयवीर सिंह
मंत्री, पर्यटन एवं संस्कृति, उत्तर प्रदेश

| एवं अन्य गणमान्य महानुभाव |

प्रमुख विशेषताएं

- देश की हृदयस्थली उत्तर प्रदेश की समृद्ध संस्कृति, लोककला, संगीत और पारंपरिक व्यंजनों का अद्भुत संगम
- ब्रज की रसधारा, अवध की विरासत, बुंदेलखंड की वीरता और पूर्वांचल की लोक धुनों पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां
- विभिन्न राज्यों के 45 फूड स्टॉल तथा लाइव स्टूडियो किचन
- भारत की विविधतापूर्ण एवं नवीन हस्तकला प्रदर्शित करते 55 क्राफ्ट स्टॉल
- भारत दर्शन पैवेलियन में विभिन्न राज्यों के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों तथा सांस्कृतिक विशेषताओं का प्रदर्शन

दिनांक : 12 नवंबर, 2025 I समय : सायं 05:00 बजे
स्थान : स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता नगर, गुजरात

लाइव प्रसारण DD NEWS व Youtube.com/DDNEWS Youtube.com/dduttarpradesh

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

काम दमदार-डबल इंजन सरकार

UPGovtOfficial | CMOUttarpradesh | CMOfficeUP

सीमाओं की आंतरिक सुरक्षा की चुनौती का मुकाबला

"वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम के तहत, पहली प्राथमिकता सीमावर्ती राज्यों से स्थानीय पलायन रोकने, दूसरे सीमावर्ती राज्यों के निवासियों को केन्द्र-राज्य सरकारों के कार्यक्रमों का शत-प्रतिशत लाभ मिले। तीसरा सीमा व उसकी सुरक्षा को और मजबूत किया जाए।

भारत की हजारों किलोमीटर की सीमा कई देशों से लगती है जिनमें चीन,म्यांमार, पाकिस्तान और बांग्लादेश ऐसे हैं जहां से हमारे लिए खतरा है। इन सीमाओं की रक्षा के लिए भारतीय सेना व सीमा सुरक्षा बल मजबूती से तैनात है। लेकिन एक नई आंतरिक समस्या सिर उठा रही है। यानी दुश्मन हमें भीतर से कमजोर करना चाहता है। इसके तहत सीमावर्ती इलाकों में वह अपने लोग तो बसा ही रहा है, हमारे इलाकों में कई तरह के ढांचे तैयार करवाने की कोशिश कर रहा है। समस्या यह है कि उत्तराखंड, अरुणाचल प्रदेश जैसे राज्यों में कठिन जीवन होने के कारण वहां से बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है और कई महत्वपूर्ण जगहों पर तो स्थानीय निवासी हैं ही नहीं। उत्तराखंड में तो यह बहुत बड़ा सिरदर्द है जहां 275 किलोमीटर की सीमा चीन से लगती है। वहां के गांवों में बड़े स्तर पर पलायन से वहां सन्नाटा है और दुश्मन के लिए मौका है। ऐसा ही खतरा पंजाब और बंगाल में है जहां दुश्मन बहुत सक्रिय है। बांग्लादेश से लगती बंगाल, त्रिपुरा और असम के सीमावर्ती इलाकों में तो डेमोग्राफिक बदलाव देखे जा रहे हैं। वहां सीमा पर धार्मिक ढांचे भी बनाये जा रहे हैं। जिससे सीमा की सुरक्षा को खतरा है। इन राज्यों में बड़े पैमाने पर बांग्लादेशियों और यहां तक कि रोहिंग्याओं का घुसपैठ होता रहा है और इन्हें इन धार्मिक स्थानों में शरण तक मिल जाती है। यह खतरे की घंटी है क्योंकि इससे हमारी सीमाएं असुरक्षित हो जाती हैं। इसे ध्यान में रखकर ही गृह मंत्रालय ने बंगाल सहित सत्रह राज्य सरकारों को पत्र लिखा है और उनसे फौरन कार्रवाई करने को कहा है। इतना ही नहीं गृह मंत्री ने बांग्लादेश, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान वगैरह देशों से सटे राज्यों की सरकारों को कहा है कि वे सीमा के अंदर 30 किलोमीटर तक बने अवैध धार्मिक ढांचों को गिरा दें।

दरअसल आसन्न खतरे को देखते हुए भारत सरकार और गृह मंत्रालय ने अपनी नीति में अग्रसक्रिय यानी पहले ही सक्रिय हो जाने की नीति अपनाई है ताकि किसी तरह की विपरीत समस्या से मुकाबला करने का अवसर न आये। डेमोग्राफिक चेंज यानी जनसांख्यिकीय बदलाव देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है। ऐसा जानबूझकर किया जा रहा है और यह स्वाभाविक रूप से नहीं हुआ है। इससे दुश्मन को मदद मिल सकती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले के प्राचीर से यह मुद्दा उठाया था और कहा था कि सीमावर्ती राज्यों में एक साजिश के तहत जनसांख्यिकीय बदलाव किया जा रहा है। यह देश की सुरक्षा को बड़ा खतरा है। इसका मुकाबला करने के लिए प्रधानमंत्री ने उच्च अधिकार वाली जनसांख्यिकी बदलाव मिशन तैयार करने की घोषणा भी की ताकि स्थानीय आबादी को बाहर वालों से बदलने की साजिश को रोकें।

इस रणनीति के तहत हाल ही में दो दिनी वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम वर्कशॉप किया गया। इसमें गृह मंत्री ने जिला कलेक्टरों से आग्रह किया कि वे अपने-अपने जिलों में सीमा से 30 किलोमीटर तक के अवैध धार्मिक ढांचों को ढहा दें। यह रणनीतिक कदम समस्या खड़ी होने से पहले उठा लिया जाए।

जीवंत गांव कार्यक्रम यानी वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम तीन बिंदुओं पर आधारित हैं। पहला तो यह है कि सीमावर्ती राज्यों से स्थानीय पलायन रोका जाये। दूसरे सीमावर्ती राज्यों के निवासियों को केन्द्र तथा राज्य सरकारों द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों का शत-प्रतिशत लाभ मिले। तीसरा यह है कि इस प्रोग्राम के तहत सीमा और उसकी सुरक्षा को और मजबूत करने के उपाय किये जायें। इस कार्यक्रम के तहत पहले से चिन्हित गांवों को जल्दी ही राष्ट्रीय और सीमा सुरक्षा के केन्द्र में लाया जायेगा। सरकार वहां इन्फ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देगी। साथ ही वहां की संस्कृति को बनाये रखने में मदद करेगी। इन इलाकों में पर्यटन के जरिये रोजगार सृजित होंगे। अरुणाचल प्रदेश में तो कार्यक्रम कार्यान्वयन से कई सीमावर्ती गांवों में जनसंख्या में बढ़ोतरी भी हुई है।

इस जीवंत गांव कार्यक्रम का केन्द्र सरकार ने पूरी तरह से वित्त पोषण किया है। ताकि हमारे सीमावर्ती क्षेत्र सुरक्षित और जीवंत रहें। इन गांवों पर कुल 6,839 करोड़ रुपये का खर्च करने की योजना बनाई गई है। यह धन अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल के उन गांवों पर 2028-29 तक खर्च किया जायेगा, जिनकी रणनीतिक भूमिका है। केन्द्र सरकार सुधार, निष्पादन और परिवर्तन के मंत्र को लेकर चल रही है ताकि देश के सुरक्षातंत्र को मजबूत किया जा सके। सरकार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सीमावर्ती क्षेत्रों को अतिक्रमण तथा अवैध निर्माण से बचाने का काम चलता रहेगा क्योंकि यह उसकी संपूर्ण सुरक्षा रणनीति का मुख्य तत्व है।

सरकार का मानना कि देश की बाह्य सुरक्षा और आंतरिक सुरक्षा दोनों पर एक साथ जोर दिये बगैर बात नहीं बनेगी। भारतीय सेना दुनिया की सबसे मजबूत सेनाओं में से है और उसे आमने-सामने की लड़ाई में हराना नामुमकिन है। इसलिए दुश्मन नये-नये तरीके अपनाता है और आंतरिक सुरक्षा पर चोट पहुंचाना उसका पुराना शस्त्र है। यह धीमे-धीमे व स्थानीय लोगों की अनुपस्थिति में किया जा सकता है।

संपादकीय

फिर दहली दिल्ली

सोमवार की शाम दिल्ली में लाल किला मेट्रो स्टेशन के पास एक कार में हुए धमाके में कुछ अनमोल जिंदगियों का खत्म होना बेहद दुखद है। काफी संख्या में लोगों के घायल होने की भी खबरें हैं। धमाके के बाद आसपास के कई वाहनों में लगी आग पर काबू पाने में अग्निशमन दल को खासी मशक्कत करनी पड़ी। पहली नजर में पुलिस इसे आतंकी घटना मानकर चल रही है। इसे संयोग मानें या दुर्योग कि आतंकवादियों के किसी भीड़-भाड़ वाले स्थान को निशाने बनाने से पहले कार में ही धमाका हो गया। देश की केंद्रीय एजेंसियां आतंकवादियों की साजिश को बेनकाब करने में जुटी हैं। पहले फरीदाबाद में कई जगह से भारी मात्रा में विस्फोटक सामग्री की बरामदगी और फिर दिल्ली में धमाके का एक दिन होना, निस्संदेह किसी बड़ी साजिश की आशंका की ओर इशारा कर रहा है। उल्लेखनीय है कि हरियाणा स्थित फरीदाबाद के फतेहपुर तगा गांव में राज्य और जम्मू एवं कश्मीर पुलिस की साझा रेड में करीब तीन हजार किलो से अधिक विस्फोटक पदार्थ बरामद हुआ था। इस मामले में गिरफ्तार दो आरोपी कश्मीरी मूल के बताए जाते हैं। इससे पहले रविवार को गांव के एक कमरे से 360 किलो अमोनियम नाइट्रेट बरामद होने की बात कही जा रही है। कल पुलिस ने दूसरे घर से 2,563 संदिग्ध विस्फोटक की बरामदगी की है। बताया जाता है कि एक मौलाना ने यह घर एक डॉ. मुजामिल ने किराये पर लिया हुआ था। पुलिस तफ्तीश में जुटी है कि इस विस्फोटक का कहां इस्तेमाल किया जाना था और क्या इनके किसी आतंकी संगठन से तार जुड़े हैं। पुलिस का दावा है कि डॉक्टर के फरीदाबाद स्थित ठिकाने से अधिकारियों ने अमोनियम नाइट्रेट और अन्य रासायनिक पदार्थों सहित आईईडी बनाने की सामग्री का एक बड़ा जखीरा बरामद किया है। जाहिर है, देश के भीतर बड़ा आतंकी हमला करने की साजिश रची जा रही थी। इस मामले में मिल रही चौंकाने वाली जानकारी इसी ओर संकेत कर रही है।

जम्मू-कश्मीर पुलिस दावा कर रही है कि उसने विभिन्न क्षेत्रों में पेशेवर चिकित्सकों के एक कट्टरपंथी मॉड्यूल का पर्दाफाश किया है। आधिकारिक सूत्र दावा कर रहे हैं कि इस साजिश का खुलासा उस समय हुआ जब श्रीनगर के नोगाम इलाके में एक पोस्टर लगा दिखा, जिसमें दुकानदारों को केंद्रीय एजेंसियों से लेन-देन न करने की चेतावनी दी गई थी। बताया जाता है कि सीसीटीवी फुटेज में पोस्टर लगाने वाले जिस व्यक्ति की शिनाख्त हुई, वह सहारनपुर में कश्मीरी मूल का डॉक्टर अदील निकला। पूछताछ में उसके श्रीनगर में कुछ अन्य डॉक्टरों से संबंधों का खुलासा हुआ। डॉ. अदील की गिरफ्तारी के बाद फरीदाबाद में डॉ. मुजामिल सहित अन्य डॉक्टरों की पहचान हुई। बताते हैं कि फरीदाबाद स्थित एक क्लीनिक से ही बड़ी मात्रा में विस्फोटक बरामद हुए। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि मानवता की सेवा की शपथ लेकर चिकित्सा के पेशे में आने वाले लोग कैसे कट्टरपंथ के चलते लोगों की जिंदगी छीनने वाले खौफनाक खेल का हिस्सा बन गए। जाहिर है, इस मॉड्यूल का मकसद देश के विभिन्न हिस्सों में धमाकों के जरिये दशहत फैलाना ही रहा होगा। निश्चय ही बड़ी मात्रा में विस्फोटकों की बरामदगी तथा आईईडी बनाने के सामान बरामद होना किसी बड़ी साजिश की ओर ही इशारा कर रहा है। निस्संदेह, राजग सरकार के दौरान दिल्ली में हुआ यह पहला बड़ा धमाका सरकार की चिंता बढ़ाने वाला है। लाल किले मेट्रो स्टेशन के निकट हुए धमाके में इस्तेमाल कार में बैठे एक घायल व्यक्ति की गिरफ्तारी की खबर कुछ सूचना माध्यमों में देखी गई। यदि वाकई गिरफ्तार व्यक्ति साजिशकर्ताओं का साथी निकला तो पुलिस को इस आतंकी षड्यंत्र की तह तक पहुंचने में मदद मिल सकेगी। जिससे अनेक लोगों को किसी बड़ी आतंकी साजिश का शिकार होने से बचाया जा सकेगा। संभव है कि इस देशी मॉड्यूल को पाक पोषित किसी बड़े आतंकी संगठन की शह मिली हो। बहरहाल, दिल्ली में मेट्रो स्टेशन के पास हुए धमाके ने सुरक्षा एजेंसियों को विशेष सतर्कता बरतने का सबक जरूर दिया है। गृह मंत्रालय व एनआई, एफएसएल, एनआईए, एनएसजी आदि विभिन्न एजेंसियों की सक्रियता बता रही है कि सरकार घटना को गंभीरता से ले रही है। विश्वास करें कि सुरक्षा एजेंसियां धमाके करने वालों तक पहुंचने में शीघ्र कामयाब हो सकेंगी।

प्रेरणा

अहंकार का अंधकार और बुद्ध का प्रकाश

राजगृह की धरती पर एक समय एक अत्यंत धनवान और प्रतिष्ठित जमींदार रहता था। उसका नाम संपन्न था, पर उसके भीतर की संपन्नता केवल सोने-चाँदी तक सीमित थी। उसका हृदय अभिमान से भरा था, और उसकी दृष्टि में जो व्यक्ति गरीब या साधारण था, वह तुच्छ और अयोग्य माना जाता था। वह जब भी अपने रथ पर बैठकर नगर की गलियों से निकलता, लोग झुककर प्रणाम करते, पर उसके चेहरे पर कभी मुस्कान नहीं आती। उसे लगता कि इन निर्धनों का अस्तित्व उसकी दया से ही है, और यदि वह चाहे तो किसी का भाग्य पलट दे या किसी का जीवन नष्ट कर दे। यह अहंकार उसके जीवन का परिचय बन चुका था।

एक दिन नगर में चर्चा फैल गई कि गौतम बुद्ध राजगृह के पास एक उपवन में ठहरे हैं। बुद्ध के प्रवचनों से अनेक लोगों के जीवन बदल रहे थे। यह सुनकर जमींदार के मन में जिज्ञासा जागी, लेकिन उसके भीतर विनम्रता नहीं, बल्कि चुनौती का भाव था। उसने मन में सोचा—"देखते हैं, यह संन्यासी क्या ज्ञान देगा मुझ जैसे धनी और शिक्षित व्यक्ति को।" गर्व और दंभ से भरे उस व्यक्ति ने अपने नौकरों से कहा कि उसके सबसे सुंदर रथ की तैयारी की जाए। सुनहरे पहिए, रेशमी परदे, और सुगंधित फूलों से सजा हुआ वह रथ जब बुद्ध के आश्रम की ओर चला तो लोग राह से हटकर उसे देखने लगे।

आश्रम में प्रवेश करते ही उसने देखा कि वहाँ कोई भव्य भवन नहीं, कोई गहने या विलासिता नहीं। मिट्टी के चूल्हे, सादा वस्त्रधारी भिक्षु और मौन में डूबे शिष्य—यह दृश्य उसके लिए अजनबी था। उसके भीतर एक व्यंग्यपूर्ण हंसी उठी। उसने मन ही मन कहा—"ये सब लोग गरीबी को ज्ञान कहकर जी रहे हैं, और मैं इन्हें देखने आया हूँ।" वह सीधे बुद्ध के पास पहुँचा, प्रणाम के स्थान पर केवल सिर झुकाया और बोला, "भगवान, लोग कहते हैं आप संसार का सत्य जानते हैं। बताइए, आप जैसे संन्यासी क्या इस संसार की वास्तविकता समझ सकते हैं, जब आपके पास न धन है न सामर्थ्य?" बुद्ध शांत भाव से मुस्कुराए। उनके नेत्रों में करुणा थी, क्रोध नहीं। उन्होंने कहा, "आओ, भीतर चलो।" वे दोनों कक्ष में गए। भीतर अंधकार था। बुद्ध ने संकेत किया कि द्वार बंद कर दिया जाए ताकि रोशनी भीतर न आ सके। कुछ क्षणों के मौन के बाद बुद्ध ने कहा, "भद्र पुरुष, क्या मैं तुम्हारी वह रत्नजड़ित अंगूठी देख सकता हूँ जो तुम्हारी उंगली में चमक रही है?" जमींदार ने गर्व से वह अंगूठी उतारी और बुद्ध के हाथ में रख दी। बुद्ध ने वह अंगूठी देखा और अचानक उसे फर्श पर गिरा दिया। अंधेरे में वह अंगूठी कहीं लुढ़क गई और गायब हो गई।

जमींदार चौंक गया। वह झुककर अंगूठी खोजने लगा, पर कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। उसने घबराकर कहा, "भगवान! यह क्या हुआ? मेरी अंगूठी तो बहुत कीमती है, अब मैं इसे कैसे ढूंढूँ?" बुद्ध ने शांत स्वर में कहा, "अंधेरे में तो कुछ नहीं दिखाई देगा, रोशनी लाओ।" जमींदार ने तुरंत आदेश दिया कि दीपक जलाया जाए। पत्थर और लकड़ी रगड़कर अग्नि उत्पन्न की गई, और कुछ ही क्षणों में दीपक जल उठा। कक्ष में उजाला फैल गया। तभी फर्श पर एक कोने में अंगूठी चमक उठी। जमींदार ने दौड़कर उसे उठा लिया और राहत की सांस ली। बुद्ध मुस्कुराए और बोले, "अब बताओ, तुम्हारी कीमती रत्नजड़ित अंगूठी किसकी मदद से मिली?" जमींदार बोला, "भगवान, पत्थर और अग्नि की वजह से। अगर प्रकाश न होता तो अंगूठी कभी नहीं मिलती।" बुद्ध ने कहा, "यही तो जीवन का सत्य है। यह पत्थर, जिसे तुम साधारण समझते हो, वही तुम्हें प्रकाश देता है। उसी प्रकाश में तुम्हारी अमूल्य वस्तु तुम्हें वापस मिलती है। इसी प्रकार जिन लोगों को तुम तुच्छ समझते हो, वही समाज का प्रकाश हैं। अगर वे न हों, तो तुम्हारे जैसे लोग भी अंधेरे में खो जाएंगे। गरीब किसान, मजदूर, शिल्पकार, सेवक — ये सब वे पत्थर हैं जिनसे समाज में ज्ञान और जीवन की अग्नि जलती है। याद रखो, रत्न का मूल्य तभी है जब प्रकाश हो, और प्रकाश का स्रोत वही है जिसे तुम नगण्य समझते हो।"

ये शब्द जमींदार के भीतर गूँज उठे। उसे लगा मानो किसी ने उसके हृदय के दरवाज़े खोल दिए हों। उसकी आँखों में नमी आ गई। वह बुद्ध के चरणों में गिर पड़ा और बोला, "भगवान, आज तक मैं भ्रम में जी रहा था। मैंने सोचा धन ही जीवन का प्रकाश है, पर आज समझा कि सच्चा प्रकाश विनम्रता और समानता में है। मैं वचन देता हूँ कि अब से किसी को छोटा नहीं समझूँगा।"

उस दिन से जमींदार का जीवन बदल गया। वह पहले जैसे गर्वीले वस्त्र पहनता, पर अब उसका हृदय विनम्र था। उसने अपने गाँव में एक सभा बनाई जहाँ गरीब और अमीर सभी साथ बैठकर भोजन करते। उसने किसानों के ऋण माफ किए, मजदूरों को सम्मान दिया, और हर आगंतुक को अपने घर में समान भाव से स्थान दिया। अब उसका घर सोने-चाँदी से नहीं, बल्कि दया और करुणा से चमकता था।

वर्षों बाद जब वह जमींदार वृद्ध हुआ, लोग उसे देखकर कहा करते थे—"यह वही व्यक्ति है जो कभी अपने अहंकार से लोगों को नीचा दिखाता था, और आज वही हर मनुष्य को ईश्वर का रूप मानता है।"

गौतम बुद्ध का वह सरल उपदेश आज भी सत्य है—अहंकार का अंधकार केवल विनम्रता के दीप से मिट सकता है। धन का तेज क्षणिक है, पर करुणा का प्रकाश शाश्वत है। जिस दिन मनुष्य यह समझ लेता है कि दूसरों के बिना उसका अस्तित्व अधूरा है, उसी दिन उसके भीतर का सच्चा ज्ञान जन्म लेता है। यही वह क्षण है जब अंधकार मिटता है और आत्मा बुद्ध के प्रकाश में स्नान करती है।

भागवत की नई दृष्टि और समरस भारत की परिकल्पना

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रायः हिंदूवादी संगठन के रूप में देखा जाता रहा है, परंतु वस्तुतः वह केवल एक धार्मिक या सांप्रदायिक संगठन नहीं, बल्कि भारतीयता और राष्ट्रीयता की जीवंत चेतना का प्रतीक है। संघ की मूल प्रेरणा "वसुधैव कुटुम्बकम्" के भाव से उपजी है, जो भारत की सनातन संस्कृति की आत्मा है। इसी दृष्टि का विस्तार संघ प्रमुख डॉ. मोहन भागवत के हालिया बेंगलुरु वक्तव्य में परिलक्षित हुआ, जब उन्होंने खुले हृदय से कहा कि "ईसाई और मुसलमान भी संघ में शामिल हो सकते हैं"। यह कथन न केवल साहसिक है बल्कि यह नए भारत, विकसित भारत और संतुलित भारत की सोच का परिचायक भी है। संघ में मुस्लिम, ईसाई समेत किसी भी संप्रदाय के लोगों के स्वागत की भागवत के वक्तव्य की व्यापक चर्चा होना स्वाभाविक है। लेकिन यह वक्तव्य संघ की व्यापक सोच का भी परिचायक है और उसके प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए। मोहन भागवत का यह वक्तव्य संघ की विचारधारा में निहित उस भारतीय दर्शन की पुनः पुष्टि करता है जिसमें धर्म का अर्थ संप्रदाय नहीं बल्कि जीवन-मूल्यों का समुच्चय है। संघ के लिए हिंदुत्व किसी धर्म विशेष का नाम नहीं, बल्कि जीवन जीने की वह पद्धति है जिसमें समरसता, सह-अस्तित्व, करुणा और राष्ट्रनिष्ठा के तत्व समाहित हैं। यही कारण है कि संघ की दृष्टि में "हिंदुत्व" का अर्थ भारतीयता है अर्थात् भारत की संस्कृति, परंपरा, इतिहास, संवेदना और जीवनशैली से आत्मीय जुड़ाव। ऐसा नहीं है कि इसके पहले संघ में विभिन्न संप्रदायों के लोगों को आने की अनुमति नहीं थी, यह अनुमति पहले से है और सच तो यह है कि उसके कार्यक्रमों में विभिन्न संप्रदायों के लोग आते भी रहे हैं। इनमें मुस्लिम और ईसाई भी हैं। इस सबके बाद भी धारणा यह भी है कि संघ के कार्यक्रमों में केवल हिंदू संप्रदाय के लोग शामिल होते हैं। इस धारणा का कारण यह है कि हिंदू संप्रदाय को लेकर संघ की अपनी विशिष्ट धारणा और परिभाषा है। उसके अनुसार देश में रहने वाले सभी लोग हिंदू ही हैं, भले ही उनका संप्रदाय और उनकी उपासना पद्धति कुछ भी हो। संघ की ओर से बार-बार यह स्पष्ट किया गया है कि चूंकि इस देश में रहने वाले समस्त लोगों के पूर्वज हिंदू ही थे, इसलिए वह सभी को हिंदू के रूप में देखता, मानता और संबोधित करता है। आखिर इस अवधारणा में कठिनाई क्या है?

संघ के दूसरे सरसंघचालक गुरुजी गोलवलकर ने कहा था, "हिंदुत्व केवल धर्म नहीं, वह संस्कृति है, जीवन का एक दृष्टिकोण है।" इसी सूत्र को आगे बढ़ाते हुए मोहन भागवत स्पष्ट करते हैं कि हिंदुत्व किसी जाति, भाषा, मज़हब या सीमित परंपरा का नाम नहीं है। संघ यह मानता है कि भारत में रहने वाले सभी लोग, चाहे वे किसी भी पंथ या विश्वास से जुड़े हों, इस धरती के सांस्कृतिक उत्तराधिकारी हैं। इसीलिए वे भारतीय हैं और इस दृष्टि से "हिंदू" अर्थात् इस भूमि की सभ्यता के उत्तराधिकारी। संघ की दृष्टि में "हिंदू" शब्द धार्मिक पहचान से अधिक सांस्कृतिक अवधारणा है। यह भारतीय जीवन का पर्याय है, जो समानता, सहिष्णुता और एकात्मता में विश्वास करता है। यही भाव "सर्वे भवन्तु सुखिनः" और "एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति" जैसे मंत्रों में प्रतिध्वनित होता है।

आज की राजनीति में समाज को जाति, धर्म और भाषा के आधार पर बाँटने का जो विषवमन चल रहा है, उससे राष्ट्र की एकात्मता को गहरी चोट पहुँच रही है। संघ का उद्देश्य इस विभाजनकारी मानसिकता के प्रतिरोध में खड़ा होना है। मोहन भागवत का यह वक्तव्य इसी विषहरण की प्रक्रिया का हिस्सा है, एक ऐसी पुकार जो समाज के हर वर्ग को यह विश्वास दिलाती है कि राष्ट्र की आत्मा किसी संकीर्ण धार्मिक पहचान में नहीं, बल्कि साझा सांस्कृतिक चेतना में निहित है। संघ के लिए राष्ट्र ही सर्वोच्च देवता है। इस राष्ट्रभक्ति के केंद्र में धर्मनिरपेक्षता नहीं बल्कि धर्मसम्मतता है अर्थात् ऐसी आस्था जो सभी मतों का सम्मान करती है। इसी भाव से प्रेरित होकर संघ अपने कार्यकर्ताओं को "हिंदू समाज की सेवा के माध्यम से समग्र भारतीय समाज की एकता" का लक्ष्य देता है।

भागवत का यह संदेश उस भारत की परिकल्पना करता है जिसमें मतभेद तो हो सकते हैं, पर मनभेद नहीं। वे मानते हैं कि "जो भी इस भूमि में जन्मा है, उसका पूर्वज कोई न कोई हिंदू ही रहा है।" यह कथन ऐतिहासिक नहीं, सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यह इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि भारत की सभ्यता का मूल एक ही रहा है, जिसने विविध रूपों में विकसित होकर अनेक धर्मों और संप्रदायों को जन्म दिया। इस संदर्भ में भागवत का दृष्टिकोण गांधीजी की उस संकल्पना से मेल खाता है जिसमें उन्होंने कहा था- "मेरा हिंदुत्व सबको समेटने वाला है, किसी को बाहर करने वाला नहीं।" यही समावेशी भाव राष्ट्र की एकता का आधार बन सकता है। यदि संघ इस पर बल देता है कि उसका उद्देश्य हिंदुओं को संगठित करना है तो इसका अर्थ यही भी है कि वह सभी भारतीयों को संगठित करके एक सशक्त राष्ट्र की परिकज्पना करता है। कठिनाई यह है कि उसके विरोधी यह प्रचारित करने का कोई अवसर नहीं छोड़ते कि वह तो केवल हिंदू समाज का संगठन है। चूंकि यह दुष्प्रचार बड़े पैमाने पर हो रहा है, इसलिए आवश्यक हो जाता है कि संघ के स्तर एवं अन्य स्तरों पर इन देश तोड़क स्थितियों एवं दुष्प्रचार का स्पष्टीकरण होता रहे। संघ को लेकर फैलायी जा रही यह भ्रांति एवं गुमराह पूर्ण स्थितियों का खुलासा होना जरूरी है कि संघ संप्रदाय विशेष के लोगों को एकजुट करने का कार्य कर रहा है। यदि यह मिथ्या धारणा दूर हो सके तो संघ का कार्य और अधिक आसान एवं सृजनात्मक हो जाएगा, लेकिन यह मानकर चला जाना चाहिए कि संघ के विरोधी उसके बारे में दुष्प्रचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी है। जो भी हो, संघ प्रमुख ने यह कहकर एक तरह से अपने विरोधियों और आलोचकों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया है कि उसके कार्यक्रमों में सभी संप्रदायों के लोग आ सकते हैं, लेकिन केवल भारत माता के पुत्र के रूप में। उनकी इस पहल का सकारात्मक उत्तर दिया जाना चाहिए, उसका व्यापक स्तर पर स्वागत भी होना चाहिए। लेकिन बड़ी विडंबना यह है कि कुछ लोग भारत को माता के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं। क्या यह किसी से छिपा है कि संकीर्ण राजनीतिक कारणों से भारत माता की जय कहने से बचा जाता है? पिछले दिनों इसी संकीर्ण दृष्टि के कारण वंदे मातरम् के विरोध में स्वर सुनाई दिए। इक्कीसवीं सदी का भारत केवल आर्थिक या तकनीकी महाशक्ति नहीं बनेगा, यदि उसके भीतर मानसिक और सांस्कृतिक एकता का सूत्र न हो। संघ इसी सूत्र को मजबूत करने का कार्य कर रहा है।

अभियान

भक्त प्रह्लाद की पुकार पर स्वयं आए भगवान नरसिंह और दैत्यराज बलि का अभिमान हरने वाले वामन देव की अद्भुत कथा

जब भी पृथ्वी पर अधर्म का अंधकार गहराता है, जब निर्दोषों पर अत्याचार बढ़ता है और जब धर्म की ज्योति बुझने लगती है, तब-तब भगवान श्रीहरि विष्णु स्वयं अवतार लेकर धरती पर उतरते हैं। उनके प्रत्येक अवतार का उद्देश्य सृष्टि में संतुलन स्थापित करना और भक्तों की रक्षा करना रहा है। प्राचीन काल में ऐसे दो अद्भुत अवतार हुए — नरसिंह और वामन। इन दोनों की कथाएं केवल पौराणिक नहीं हैं, बल्कि मानव जीवन को यह सिखाती हैं कि अहंकार चाहे कितना भी प्रबल क्यों न हो, भक्ति की सच्चाई के आगे टिक नहीं सकता।

बहुत समय पहले की बात है। ब्रह्मांड के श्रेष्ठ ऋषि कश्यप और उनकी पत्नी दिति के दो पुत्र हुए — हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप। दोनों ही असुर कुल में जन्मे थे, लेकिन उनकी शक्ति और तेज इतना अधिक था कि देवता तक उनसे भयभीत रहते थे। एक दिन हिरण्याक्ष ने इतना घोर अत्याचार किया कि उसने पृथ्वी को समुद्र में डुबो दिया। तब भगवान विष्णु ने वराह (सूअर) का रूप धारण किया, समुद्र की गहराइयों में उतरकर पृथ्वी को बचाया और हिरण्याक्ष का वध कर दिया। यह दृश्य देखकर उसका भाई हिरण्यकश्यप क्रोध और प्रतिशोध से जल उठा। उसने संकल्प लिया कि वह अपने भाई की मृत्यु का बदला लेकर रहेगा।

हजारों वर्षों तक उसने ब्रह्मा जी की कठोर तपस्या की। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी प्रकट हुए और बोले – "वर मांगो हे दैत्यराज।" हिरण्यकश्यप ने चतुराई से कहा, "हे प्रभु, मुझे ऐसा वरदान दीजिए कि न मैं किसी मनुष्य से मरूं, न किसी पशु से; न घर के भीतर, न बाहर; न दिन में, न रात में; न आकाश में, न पृथ्वी पर; न किसी अस्त्र से, न किसी शस्त्र से।" ब्रह्मा जी उसकी बातों में छिपे छल को समझ तो गए, पर उन्होंने उसका वरदान स्वीकार कर लिया। वरदान पाकर हिरण्यकश्यप अजेय बन गया। उसने तीनों लोकों पर अधिकार कर लिया और स्वयं को भगवान घोषित कर दिया। उसके आदेश पर समस्त प्रजा उसे देवता की तरह पूजने लगी। जो उसकी पूजा नहीं करता, वह मृत्यु का भागी होता।

किन्तु उसके ही घर में जन्मा पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु का परम भक्त था। बालक प्रह्लाद दिन-रात विष्णु नाम का जप करता। यह बात हिरण्यकश्यप को असह्य थी। उसने

अपने पुत्र को समझाया, धमकाया, यहाँ तक कि उसे मृत्यु देने का भी प्रयास किया। कभी विषधर नागों से डसवाया, कभी ऊँचाई से गिरवाया, कभी जलते अंगारों पर बैठवाया, परंतु हर बार भगवान विष्णु ने अपने भक्त की रक्षा की।

एक दिन क्रोध में जलता हिरण्यकश्यप बोला — "बताओ, तुम्हारा भगवान कहाँ है?" प्रह्लाद ने शांत स्वर में कहा, "पिता, भगवान सर्वत्र हैं।" उसने गर्व से खंभे की ओर इशारा किया। "क्या वह इसमें भी है?" — हिरण्यकश्यप ने व्यंग्य से पूछा और अपने गदा से खंभे पर प्रहार किया। खंभा चटक गया और उसी क्षण एक गर्जन भरी आवाज़ के साथ भगवान विष्णु नरसिंह रूप में प्रकट हुए — आधे सिंह, आधे मनुष्य। उनकी आंखों में अग्नि थी, नखों में तेज और चेहरे पर करुणा। उन्होंने हिरण्यकश्यप को दरवाजे की चौखट पर, जो न अंदर थी न बाहर, संध्या के समय जो न दिन था न रात, अपनी गोद में जो न पृथ्वी थी न आकाश, अपने नखों से — जो न अस्त्र थे न शस्त्र — उसका वध कर दिया। इस प्रकार भगवान ने भक्त प्रह्लाद की रक्षा की और अहंकार का अंत किया।

समय बीतता गया, युग बदल गए। त्रेतायुग में जब दैत्यराज बलि ने तीनों लोकों पर अपना अधिकार जमा लिया, तब भी भगवान विष्णु को अपने भक्तों की रक्षा हेतु अवतरित होना पड़ा। बलि अत्यंत पराक्रमी और दानी राजा था, किंतु शक्ति के मद में अंधा हो गया था। उसने स्वर्ग तक पर अधिकार कर लिया, जिससे इंद्रादि देवता भी व्याकुल हो उठे। वे सभी भगवान विष्णु के पास पहुंचे और विनती की — "प्रभु, हमारे लोकों को इस असुर से मुक्त कराइए।"

देवताओं की पुकार सुनकर भगवान ने एक नई लीला की योजना बनाई। उन्होंने ऋषि कश्यप और अदिति के पुत्र रूप में जन्म लिया। इस बार वे छोटे बालक के रूप में आए — बौने ब्राह्मण वामन। उनके हाथ में कमंडल, कांधे पर छाता और मुख पर दिव्यता थी। जब राजा बलि अपने यज्ञ में दान दे रहा था, तभी यह छोटा-सा ब्राह्मण बालक वहाँ पहुँचा। उसने मधुर वाणी में कहा, "हे महान राजा, मुझे केवल तीन पग भूमि चाहिए, जिस पर मैं निवास कर सकूं।"

सभी दरबारी हँस पड़े — "इतना छोटा ब्राह्मण और मांग भी तीन पग भूमि की!" लेकिन बलि अपने वचन का पक्का था। गुरु शुक्राचार्य ने चेताया कि यह कोई साधारण बालक नहीं, स्वयं विष्णु हैं। पर बलि ने कहा, "यदि भगवान स्वयं मेरे द्वार पर आए हैं, तो मैं उन्हें दान देकर धन्य हो जाऊँगा।" उसने वचन दे दिया। तभी वामन देव का रूप बढ़ने लगा — वह इतना विशाल हो गए कि एक पग में पूरी पृथ्वी, दूसरे में स्वर्ग नाप लिया। फिर मुस्कुराकर बोले, "राजन, अब बताओ तीसरा पग कहाँ रखूं?"

बलि ने नम्र होकर कहा, "प्रभु, तीसरा पग मेरे सिर पर रख दीजिए।" भगवान ने आशीर्वादस्वरूप अपना पाँव उसके सिर पर रखा और उसे पाताल लोक का राजा बना दिया। बलि का अभिमान मिट गया, पर उसकी भक्ति अमर हो गई। आज भी कहा जाता है कि हर वर्ष बलि प्रतिपदा के दिन वह पृथ्वी पर आते हैं, और लोग उस दिन दीपदान करके उनका स्वागत करते हैं।

इस प्रकार भगवान के नरसिंह और वामन अवतार हमें यह सिखाते हैं कि अहंकार चाहे असुरों का हो या मनुष्यों का, वह अंततः विनम्रता और भक्ति के आगे झुकता ही है। जब भी धर्म पर संकट आता है, जब भी भक्त की पुकार होती है, भगवान स्वयं अवतरित होकर कहते हैं — "अहंकार से अंधकार बढ़ता है, पर भक्ति से सारा संसार प्रकाशित होता है।"

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

भारत पर्व-2025, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी-एकता नगर : कठपुतली शो की मनमोहक प्रस्तुतियों ने जीता लोगों का दिल

- राजस्थान की परंपरागत कठपुतली कला में नजर आया भारतीय संस्कृति और एकता का प्रतिबिंब
- परंपरा, संदेश और सृजनात्मकता का अनोखा समन्वय : कलाकारों को सरकार की मान्यता और सहयोग मिला
- कठपुतली कला के माध्यम से लोगों को आनंद भी मिलता है और सरकार के संदेश भी आसानी से समझ पाते हैं : पवनभाई भाट, कलाकार
- भारत पर्व-2025 के मंच से हम जैसे छोटे कलाकारों को एक बड़ा प्लेटफॉर्म मिला है, इसके लिए हम सरकार के आभारी हैं : कठपुतली कलाकार

(जीएनएस)। गांधीनगर : 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के ध्येय को जीवंत बना रहे भारत पर्व-2025 में लोक कला और आधुनिक संस्कृति का अद्भुत संगम देखने को मिला है। एकता नगर के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में चल रहे भारत-पर्व के अंतर्गत राजस्थान की कठपुतली कला ने सभी का मन जीत लिया है। रंग-बिरंगी वेशभूषा, परंपरागत संगीत और जीवंत पात्रों द्वारा जीवन के प्रसंगों की अभिव्यक्ति के शानदार मंचन ने भारत की इस प्राचीन कला ने एक बार फिर अपनी एक विशिष्ट छाप छोड़ी है। मूल राजस्थान के नागौर जिले के और वर्तमान में अहमदाबाद निवासी पवनभाई हरिभाई भाट और उनके चाचा महिपालभाई नारणभाई भाट पिछले 25 वर्षों से कठपुतली कला को जीवंत रखने में जुटे हुए हैं। पवनभाई ने बताया कि कठपुतली कला हमारे दादा-परदादा के दौर से हमारी पहचान रही है। पहले हम गांव-गांव जाकर लोगों का मनोरंजन करते थे, लेकिन आज यह कला सरकारी योजनाओं के प्रचार-प्रसार का माध्यम बन गई है। उन्होंने कहा कि भारत पर्व-2025 में हमारी इस कला को प्रस्तुत करने का अवसर मिलना हमारे लिए

गर्व की बात है। यहां सरकार की ओर से रहने और खाने की सुविधा के साथ ही रोजगार भी मिल रहा है।

उन्होंने कहा कि कठपुतली का खेल न केवल मनोरंजन का जरिया है, बल्कि यह सामाजिक संदेश देने वाला एक जीवंत माध्यम भी है। इस कला के माध्यम से कलाकार गांवों में स्वच्छता, शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता पैदा कर रहे हैं। पवनभाई ने कहा कि यह कला लोगों तक पहुंचने का सबसे सहज मार्ग है, क्योंकि कठपुतली की भाषा हर कोई समझता है। कठपुतली शब्द सुनते ही बचपन की मीठी यादें ताजा हो जाती हैं। गांव की गली में लालटेन की रोशनी के बीच इकट्ठा हुए बच्चों और बुजुर्गों के बीच जीवंत होती कठपुतली कला उस दौर में मनोरंजन का मुख्य साधन थी, जब टेलीविजन और मोबाइल नहीं थे। आज के टेक्नोलॉजी युग में भले ही मनोरंजन के साधन बदल गए हों, लेकिन कठपुतली कला ने अपना स्थान कायम रखा है। अब यह कला पपेट थियेटर के रूप में शैक्षणिक और सामाजिक संदेश देने के माध्यम के तौर पर इस्तेमाल की जाती है। माना जाता है कि भारत में कठपुतली की कला लगभग दो हजार वर्ष पुरानी है। राजस्थान की धरती इस कला की जननी मानी जाती है। पतले धागे से नचाई जाने वाली कठपुतलियों के जरिए कलाकार महाराणा प्रताप और अमर सिंह राठौड़ जैसे शूरवीरों की शौर्य गाथाओं और लोक कहानियों की जीवंत प्रस्तुति देते हैं। यह कला राजस्थान की संस्कृति और परंपरा का गौरवशाली प्रतीक बन गई है। भारत पर्व-2025 में देश के विभिन्न राज्यों की लोक कलाओं ने भारतीय संस्कृति की विविधता को शानदार ढंग से प्रस्तुत किया है, जिनमें कठपुतली कला का प्रदर्शन लोकप्रिय आकर्षण बन गया है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी परिसर में कठपुतली कला की शानदार प्रस्तुति ने उत्साहित लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया।

यहां सरकार की ओर से कलाकारों को रहने और खाने के साथ-साथ रोजगार भी प्रदान किया जा रहा है, जो लोककलाओं को पुनर्जीवित करने का एक बढ़िया प्रयास है। पवनभाई कहते हैं कि भारत पर्व ने उन्हें उनकी कला को एक नए मंच पर प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया है। लोग इस कला का आनंद उठाते हैं और सरकार के संदेश भी आसानी से समझ पाते हैं। भारत पर्व-2025 केवल एक उत्सव ही नहीं है, बल्कि यह परंपरा और प्रगति के बीच एक जीवंत पुल भी है। यहां लोक कला, परंपरागत कारीगरी और आधुनिक भारत की झलक एक साथ देखने को मिलती है। एकता नगर में गूंजती कठपुतली की धुन यह साबित करती है कि भारतीय परंपराएं आज भी जीवंत हैं।

भारत पर घटेगा आयात शुल्क, ट्रंप बोले—"अब होगा निष्पक्ष और संतुलित व्यापार समझौता"

(जीएनएस)। वॉशिंगटन। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संकेत दिया है कि भारत पर लगाए गए ऊंचे आयात शुल्कों को जल्द ही घटाया जाएगा। ओवल ऑफिस में सोमवार को भारत में अमेरिका के नए राजदूत सर्जियो गोर के शपथ ग्रहण समारोह के दौरान ट्रंप ने कहा कि "भारत पर लगाए गए टैरिफ बहुत ज्यादा हैं, जिन्हें कम करने का समय आ गया है।" उन्होंने दावा किया कि भारत और अमेरिका के बीच एक नया और संतुलित व्यापार समझौता लगभग अंतिम चरण में है, जो पहले से कहीं अधिक न्यायसंगत होगा। ट्रंप ने कहा कि यह निर्णय भारत की बदलती ऊर्जा नीति को देखते हुए लिया गया है। उनके मुताबिक, रूस से तेल की खरीद में भारत ने अब पर्याप्त कमी कर दी है। "भारत अब रूस से सीमित मात्रा में तेल खरीद रहा है। इसलिए हम आयात शुल्कों में कटौती करने जा रहे हैं। यह कदम उचित समय पर लागू किया जाएगा," ट्रंप ने कहा। दरअसल, ट्रंप प्रशासन ने रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत पर 50% तक के आयात शुल्क लगाए थे, यह दावा करते हुए कि भारत की रूसी तेल खरीद से रूस को आर्थिक राहत मिल रही है। यह शुल्क अमेरिका द्वारा किसी भी देश पर लगाए गए सबसे अधिक टैरिफ में से एक था। ट्रंप ने कहा कि अब हालात बदल चुके हैं। दोनों देशों के बीच संबंधों में नई गर्माहट लौट रही है और एक नया व्यापारिक संतुलन स्थापित किया जा रहा है। "हम अब समानता के आधार पर काम कर रहे हैं। पहले के समझौते एकतरफा थे, लेकिन अब हम एक निष्पक्ष, पारस्परिक लाभकारी और दीर्घकालिक व्यवस्था की ओर बढ़ रहे हैं," उन्होंने कहा। ट्रंप ने यह भी स्वीकार किया कि रूस पर प्रतिबंध लगाने और तेल पर सख्त नीति के कारण वे भारत में "अलोकप्रिय" हो गए थे, लेकिन उन्हें भरोसा है कि यह अस्थायी है। "शायद इस समय मैं भारत में बहुत लोकप्रिय नहीं हूं, लेकिन मुझे विश्वास है कि जल्द ही हम फिर मजबूत दोस्त बनेंगे," ट्रंप ने मुस्कराते हुए कहा। शपथ ग्रहण के बाद भारत में नए अमेरिकी राजदूत सर्जियो गोर ने कहा कि वह दोनों देशों के संबंधों को "नई ऊंचाइयों" तक ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने कहा, "भारत और अमेरिका के बीच साझेदारी 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण कूटनीतिक और आर्थिक साझेदारी में से एक है। मैं इस रिश्ते को और गहराई देने के लिए काम करूंगा।"

समारोह में उप राष्ट्रपति जे.डी. वेंस, विदेश मंत्री मार्को रूबियो, वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट, अटॉर्नी जनरल टॉम बॉन्डी, कई सीनेटरों और रिपब्लिकन कार्यकर्ता चार्ली किर्क की पत्नी एरिका किर्क भी मौजूद थीं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि ट्रंप का यह बयान अमेरिका की एशिया नीति में एक बड़ा बदलाव दर्शाता है। यह कदम न केवल भारत-अमेरिका व्यापारिक रिश्तों को नई दिशा देगा बल्कि ट्रंप प्रशासन के "अमेरिका फर्स्ट" एजेंडे को भी एक नए संतुलन के साथ परिभाषित करेगा — जहां व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ रणनीतिक सहयोग भी समान रूप से महत्वपूर्ण होगा।

गांधीनगर-जयपुर स्टेशन पुनर्विकास कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

(जीएनएस)। उत्तर पश्चिम रेलवे के गांधीनगर-जयपुर स्टेशन के पुनर्विकास और बड़े स्तर पर उन्नयन कार्य के मद्देनजर 9 नवंबर से 13 दिसंबर, 2025 तक 35 दिनों का ब्लॉक लिया गया है, जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी। प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट/आंशिक रूप से निरस्त होने वाली ट्रेनें:

1. 8 दिसंबर, 2025 को ओखा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20951 ओखा-जयपुर एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन अजमेर और जयपुर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी। इसी प्रकार, 9 दिसंबर, 2025 को जयपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20952 जयपुर-ओखा एक्सप्रेस अजमेर स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी। इसलिए, यह ट्रेन जयपुर और अजमेर के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

परिवर्तित मार्ग से चलने वाली ट्रेनें:

1. 13 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 12215 दिल्ली सराय रोहिल्ला-बांद्रा टर्मिनस गरीब रथ एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
2. 13 नवंबर, 2025 से 12 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19269 पोरबंदर-मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
3. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19416 श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
4. 09 दिसंबर, 2025 तक पोरबंदर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20937 पोरबंदर-दिल्ली सराय रोहिल्ला एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया फुलेरा-रींगस-रेवाड़ी स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन रींगस, नीम का थाना और नारनौल स्टेशनों पर रुकेगी।
5. 24 नवंबर, 2025 से 8 दिसंबर, 2025 तक दिल्ली सराय रोहिल्ला से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20938 दिल्ली सराय रोहिल्ला-पोरबंदर एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
6. 26 नवंबर, 2025 और 3 दिसंबर, 2025 तक सुल्तानपुर से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20940 सुल्तानपुर-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
7. 29 नवंबर, 2025 और 06 दिसंबर, 2025 को वाराणसी से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 20964 वाराणसी-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया रेवाड़ी-रींगस-फुलेरा स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन नारनौल, नीम का थाना और रींगस स्टेशनों पर रुकेगी।
8. 25 नवंबर, 2025 और 02 दिसंबर, 2025 को लखनऊ से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19402 लखनऊ-साबरमती एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-साबरमती स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।
9. 25 नवंबर, 2025 को अयोध्या कैंट से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19202 अयोध्या कैंट-भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाया भरतपुर-कोटा-आणंद-अहमदाबाद-विरमगाम स्टेशनों के रास्ते चलाई जाएगी और यह ट्रेन सवाई माधोपुर, कोटा, भवानी मंडी, शामगढ़, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोधरा और आणंद स्टेशनों पर रुकेगी।

भावनगर रेलवे मंडल के कर्मचारियों ने 1.70 लाख कीमत का यात्री का भूलवश छूटा लैपटॉप सुरक्षित लौटाया

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे, भावनगर मंडल के कर्मचारी अपने सम्मानित यात्रियों की सहायता हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। इसी प्रतिबद्धता का एक उत्कृष्ट उदाहरण वेरावल स्टेशन पर देखने को मिला, जहाँ एक यात्री का लैपटॉप वाला बैग भूलवश सोमनाथ एक्सप्रेस ट्रेन में छूट गया था, जिसे रेलवे कर्मचारियों ने अत्यंत ईमानदारी एवं जिम्मेदारी के साथ सुरक्षित ढूंढ़कर यात्री को लौटा दिया।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि 10 नवम्बर, 2025 को एक यात्री ट्रेन नंबर 22957 गांधीनगर कैपिटल-वेरावल सोमनाथ एक्सप्रेस में बी-1 कोच में चांदलोडिया से केशोद तक यात्रा किये। केशोद पहुंचने के बाद जल्दबाजी में उनका लैपटॉप वाला बैग, सीट पर हीं भूलवश छूट गया। ट्रेन के प्रस्थान करने के बाद उन्होंने रेलमदद ऐप के माध्यम से रेलवे प्रशासन को सूचित किया। रेलमदद पर सूचना प्राप्त होते हीं रेलवे कर्मचारी हरकत में आ गये। कंट्रोल ओफिस से ट्रेन में कार्यरत टीटीई श्री शम्भू प्रसाद को मैसेज किया गया। सूचना प्राप्त होने पर टीटीई श्री शम्भू प्रसाद ने उक्त कोच के बर्थ पर जाकर देखा तो वहां उनको लैपटॉप वाला बैग मिल गया। इसकी सूचना यात्री को दे दी गई और आवश्यक पूछताछ के पश्चात वेरावल स्टेशन पर यात्री को लैपटॉप सहित बैग सौंप दिया गया। लैपटॉप सुरक्षित रूप से प्राप्त होने पर यात्री ने रेलवे प्रशासन के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की और सभी संबंधित कर्मचारियों का धन्यवाद किया।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने इस सराहनीय कार्य के लिए संबंधित कर्मचारियों की प्रशंसा करते हुए उन्हें प्रोत्साहित किया और कहा कि यह कार्य भारतीय रेल की ईमानदारी, जिम्मेदारी एवं यात्री सेवा की भावना का प्रतीक है।

दिल्ली फिर गैस चेंबर में तब्दील, हवा में जहर घुला — लागू हुए ग्रेप-3 के सख्त प्रतिबंध

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली की हवा एक बार फिर खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है। सांस लेना तक दूभर हो गया है। मंगलवार सुबह वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) 425 दर्ज किया गया — जो 'गंभीर' श्रेणी में आता है। केंद्र सरकार के अधीन वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) ने स्थिति की भयावहता को देखते हुए ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) का तीसरा चरण लागू कर दिया है, जिसके तहत कई सख्त प्रतिबंध तुरंत प्रभाव से लागू हो गए हैं। दिल्ली के कई इलाकों में सुबह-सुबह घनी धुंध और धुएं की चादर छाई रही। दृश्यता घटकर 200 मीटर तक रह गई, जिससे यातायात प्रभावित हुआ। विशेषज्ञों का कहना है कि शांत हवाएं, ठंड की दस्तक और पंजाब-हरियाणा में पराली जलने के मामलों ने मिलकर दिल्ली की हवा को जहरीला बना दिया है। इस प्रदूषण की परत अब पूरे एनसीआर को अपनी गिरफ्त में ले चुकी है। सरकार ने लोगों से अपील की है कि बिना जरूरी काम के घर से बाहर न निकलें, खासकर बुजुर्ग, बच्चे और सांस की बीमारी से पीड़ित लोग। मास्क का इस्तेमाल और घरों में एयर प्यूरीफायर चलाने की सलाह दी गई है। ग्रेप-3 के तहत अब राजधानी और आसपास के इलाकों में BS-3 पेट्रोल और BS-4 डीजल वाहनों के संचालन पर रोक लगा दी गई है। गैर-जरूरी निर्माण और विध्वंस कार्य, ईंट भट्टे, हॉट मिक्स प्लांट, और डीजल जनरेटर जैसे प्रदूषण फैलाने वाले स्रोतों को तत्काल बंद करने का आदेश जारी किया गया है। साथ ही, मध्यम आकार के मालवाहक वाहनों की आवाजाही पर भी प्रतिबंध लागू रहेगा।

स्कूलों के लिए भी सरकार ने एहतियात के कदम उठाए हैं। कक्षा 5 तक के छात्रों के लिए स्कूलों को हाइब्रिड या पूरी तरह ऑनलाइन मोड में चलाने का विकल्प दिया गया है ताकि बच्चों को जहरीली हवा से बचाया जा सके। CAQM के अधिकारियों के अनुसार, दिल्ली की हवा में सूक्ष्म कण (PM 2.5 और PM 10) की मात्रा सुरक्षित सीमा से 8 से 10 गुना अधिक पाई गई है। मौसम विभाग ने अगले तीन दिनों तक स्थिति में कोई राहत की संभावना नहीं जताई है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर प्रदूषण का स्तर इसी तरह बढ़ता रहा तो सरकार को ग्रेप-4 यानी "आपात स्तर" के उपाय लागू करने पड़ सकते हैं — जिसमें निजी वाहनों पर ऑड-ईवन, औद्योगिक बंदी और सरकारी कार्यालयों को वर्क फ्रॉम होम जैसी पाबंदियां शामिल हैं।

दिल्ली से ग्वांगझोउ के बीच अब सीधी उड़ान, इंडिगो ने शुरू की नई अंतरराष्ट्रीय सेवा

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत और चीन के बीच ठंडी पड़ी हवाई कड़ियों में अब नई गर्माहट लौट आई है। देश की सबसे बड़ी बजट एयरलाइन इंडिगो ने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से चीन के औद्योगिक शहर ग्वांगझोउ के लिए सीधी उड़ान सेवा शुरू कर दी है। यह कदम दोनों देशों के बीच व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक संपर्कों को नई दिशा देने वाला माना जा रहा है।

10 नवंबर से शुरू हुई यह सेवा इंडिगो की कोलकाता–ग्वांगझोउ उड़ान के बाद भारत और चीन के बीच दूसरी सीधी कनेक्टिविटी है। कंपनी ने बताया कि यह उड़ान प्रतिदिन संचालित की जाएगी और इसमें ए-320 नियो नैरो-बॉडी विमान का उपयोग किया जाएगा, जो यात्रियों को किफायती और आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करेगा।

इंडिगो ने इस नए मार्ग को लेकर कहा कि दिल्ली भारत का प्रमुख विमानन केंद्र है, और ग्वांगझोउ दक्षिण चीन का औद्योगिक व व्यावसायिक हृदयस्थल। इस रूट से व्यापारियों, निवेशकों और पर्यटकों को समान रूप से सुविधा मिलेगी। नई सेवा के

साथ इंडिगो अब दिल्ली से 21 अंतरराष्ट्रीय गंतव्यों को जोड़ने वाली एयरलाइन बन गई है — जो उसके अंतरराष्ट्रीय विस्तार की दिशा में एक और मजबूत कदम है।

एयरलाइन ने बताया कि कुछ ही हफ्ते पहले, 26 अक्टूबर को कोलकाता–ग्वांगझोउ के बीच उड़ानें भी पुनः शुरू की गई थीं, जबकि चाइना ईस्टर्न एयरलाइंस ने 9 नवंबर को दिल्ली–शंघाई सीधी सेवा शुरू की। इन पहलों को दोनों देशों के बीच सामान्य होती हवाई आवाजाही का संकेत माना जा रहा है।

कोविड-19 महामारी और पूर्वी लद्दाख सीमा तनाव के कारण 2020 की शुरुआत में भारत और चीन के बीच सभी सीधी उड़ानें निलंबित कर दी गई थीं। अब, लगभग पांच साल बाद, यह उड़ान सेवा दोनों देशों के बीच कूटनीतिक और आर्थिक संबंधों की पुनर्बहाली का प्रतीक बनकर उभरी है। उद्योग विशेषज्ञों का कहना है कि इस नई उड़ान से भारत और चीन के बीच व्यापारिक सहयोग को गति मिलेगी, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, वस्त्र और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में। वहीं, यात्रियों के लिए यह एक सुविधाजनक विकल्प बनेगी, जो अब बिना किसी ट्रांजिट के सीधे दिल्ली से ग्वांगझोउ तक की यात्रा कर सकेंगे। इंडिगो के प्रवक्ता ने कहा — "हमारा उद्देश्य भारत और एशिया के प्रमुख शहरों के बीच सीधी कनेक्टिविटी बढ़ाना है। ग्वांगझोउ के लिए यह नई उड़ान हमारे अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क को और मजबूत करेगी तथा यात्रियों को तेज, सस्ती और विश्वसनीय यात्रा सुविधा देगी।"

इस नई उड़ान से उम्मीद की जा रही है कि आने वाले महीनों में भारत–चीन के बीच यात्रियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और दोनों देशों के बीच व्यावसायिक सहयोग के नए द्वार खुलेंगे।

19 नवम्बर को भावनगर से तथा 21 नवम्बर को पालीताना से, बान्द्रा टर्मिनस के लिए चलेगी "स्पेशल ट्रेन"

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा अतिरिक्त भीड़ को समायोजित करने के लिए भावनगर टर्मिनस से बान्द्रा टर्मिनस, बान्द्रा टर्मिनस से पालीताना, पालीताना से बान्द्रा टर्मिनस और बान्द्रा टर्मिनस से भावनगर टर्मिनस स्टेशनों के बीच विशेष किराए पर "स्पेशल ट्रेनें" चलाई जाएंगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैः

1. ट्रेन संख्या 09230 भावनगर टर्मिनस-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल बुधवार, 19 नवम्बर, 2025 को भावनगर टर्मिनस से 21:20 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 11:20 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन भावनगर परा, सिहोर (गुजरात), सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, आणंद, वडोदरा, भरूच, सूरत, नवसारी, वलसाड़, वापी, पालघर एवं बोरीवली स्टेशनों पर रूकेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09229 बांद्रा टर्मिनस-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल गुरूवार, 20 नवम्बर, 2025 को 14:30 बजे बान्द्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन सुबह 06:00 बजे पालीताना पहुंचेगी। यह ट्रेन बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाढ़, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़ और सिहोर (गुजरात) स्टेशनों पर रूकेगी।

2. ट्रेन संख्या 09232 पालीताना-बांद्रा टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल शुक्रवार, 21 नवम्बर, 2025 को पालीताना से 20:00 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 10:00 बजे बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन सिहोर (गुजरात), सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, आणंद, वडोदरा, भरूच, सूरत, नवसारी, वलसाढ़, वापी, पालघर एवं बोरीवली स्टेशनों पर रूकेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09231 बांद्रा टर्मिनस-भावनगर टर्मिनस सुपरफास्ट स्पेशल शनिवार, 22 नवम्बर, 2025 को 12:45 बजे बान्द्रा टर्मिनस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन प्रातः 04:45 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन बोरीवली, पालघर, वापी, वलसाढ़, नवसारी, सूरत, भरूच, वडोदरा, आणंद, अहमदाबाद, बोटाद, धोला, सोनगढ़, सिहोर (गुजरात) और भावनगर परा स्टेशनों पर रूकेगी।

उपरोक्त सभी ट्रेनों में सेकंड एसी, थर्ड एसी, स्लीपर और सेकंड क्लास जनरल कोच होंगे।

उपरोक्त सभी ट्रेनों की बुकिंग 13 नवम्बर, 2025 (गुरूवार) से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। सभी ट्रेनों के समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

महिला क्रिकेट विश्व कप की विजेता भारतीय टीम की खिलाड़ी वडोदरा की सुश्री राधा यादव ने मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से सौजन्य मुलाकात की

मुख्यमंत्री ने सुश्री राधा यादव का शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया और विश्व कप में टीम के शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी

(जीएनएस)। गांधीनगर : महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 की विजेता भारतीय टीम की सदस्य वडोदरा की सुश्री राधा यादव ने मंगलवार को गांधीनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल से सौजन्य मुलाकात की। सुश्री राधा यादव भारतीय टीम में बतौर ऑलराउंडर शामिल की गई थीं। उन्होंने 2018 में दक्षिण अफ्रीका महिला टीम के खिलाफ हुए मुकाबले के दौरान पहली बार भारतीय टीम में अपना स्थान बनाकर 20-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के क्षेत्र में पदार्पण किया था। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने सुश्री राधा यादव का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते हुए महिला क्रिकेट विश्व कप में भारतीय महिला टीम के शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दीं। इस अवसर पर महिला एवं बाल कल्याण मंत्री श्रीमती मनीषा वकील भी मौजूद रहीं।

पोरबंदर-राजकोट के बीच चलेंगी दो नई पैसेन्जर ट्रेनें

(जीएनएस)। डॉ. मनसुख मांडविया, माननीय केंद्रीय श्रम, रोजगार, युवा मामले और खेल मंत्री, भारत सरकार के प्रयासों से रेलवे बोर्ड ने पोरबंदर-राजकोट के बीच 2 नई ट्रेनों को चलाने हेतु अनुमति प्रदान कर दी है। ये दोनों ट्रेनें अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार हैः

1. राजकोट-पोरबंदर शुरूआती स्पेशल ट्रेन (Inaugural Special Train) ट्रेन नंबर 09561 राजकोट-पोरबंदर शुरूआती स्पेशल (Inaugural Special), राजकोट स्टेशन से सुबह 10.30 बजे प्रस्थान करेगी एवं 14.40 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन 14 नवम्बर, 2025 (शुक्रवार) को राजकोट स्टेशन से सुबह 10.30 बजे प्रस्थान करेगी।
2. राजकोट-पोरबंदर-राजकोट दैनिक पैसेन्जर ट्रेन

ट्रेन नंबर 59561 राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर दैनिक राजकोट स्टेशन से सुबह 8.35 बजे प्रस्थान करेगी एवं 13.15 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। इसी प्रकार, ट्रेन नंबर 59562 पोरबंदर-राजकोट पैसेन्जर दैनिक पोरबंदर से 14.30 बजे प्रस्थान करेगी एवं 18.55 बजे राजकोट स्टेशन पहुंचेगी। ये दोनों ट्रेनें 15.11.2025 से प्रतिदिन नियमित रूप से अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी।

3. पोरबंदर-राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर ट्रेन (सप्ताह में 5 दिन)

ट्रेन नंबर 59564 पोरबंदर-राजकोट पैसेन्जर (सप्ताह में 5 दिन, गुरूवार और रविवार को छोड़कर) पोरबंदर स्टेशन से सुबह 7.50 बजे प्रस्थान करेगी एवं 12.35 बजे राजकोट स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन 15.11.2025 से सप्ताह में 5 दिन (गुरूवार और रविवार को छोड़कर) अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी।

इसी प्रकार, ट्रेन नंबर 59563 राजकोट-पोरबंदर पैसेन्जर (सप्ताह में 5 दिन, बुधवार और शनिवार को छोड़कर) राजकोट स्टेशन से दोपहर 14.50 बजे प्रस्थान करेगी एवं 20.30 बजे पोरबंदर स्टेशन पहुंचेगी। यह ट्रेन 16.11.2025 से सप्ताह में 5 दिन (बुधवार और शनिवार को छोड़कर) अपने निर्धारित समयानुसार चलेंगी।

उपरोक्त सभी ट्रेनें अपनी यात्रा के दौरान भक्तिनगर, रीबडा, गोंडल, वीरपुर, नवागढ़, जेतलसर, धोराजी, उपलेटा, पानेली मोटी, जाम जोधपुर, बालवा, काटकोला, वांसजालिया और राणावाव स्टेशनों पर दोनों दिशाओं में रूकेंगी।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त ट्रेनों को चलाने हेतु ट्रेन नंबर 19572 पोरबंदर-राजकोट एक्सप्रेस के समय में परिवर्तन किया जाएगा। यह ट्रेन पोरबंदर से अपने वर्तमान निर्धारित समय 14.35 बजे की बजाय 16.00 बजे प्रस्थान करेगी। इसी प्रकार, राजकोट स्टेशन पर 18.55 बजे की बजाय 21.20 बजे पहुंचेगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल माणसा के सोजा गांव में आयोजित देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में शामिल हुए

सोजा गांव एकता के बल पर प्रधानमंत्री के 'विकास भी, विरासत भी' के मंत्र को साकार कर रहा है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- देवी भागवत कथा का श्रवण करने से माता के स्वरूपों और पराक्रमों के ज्ञान के साथ-साथ समाज में स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना को बल मिलता है
- सोजा गांव स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर आदर्श गांव बने

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल मंगलवार को गांधीनगर जिले की माणसा तहसील के सोजा गांव में आयोजित देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' का कार्यमंत्र सोजा गांव में श्री वीर वेलुड़ा सेवा मंडल द्वारा अर्धशताब्दी महोत्सव के अवसर पर आयोजित देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ में साकार हुआ है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वीर वेलुड़ा महाराज ने अपने प्राण का बलिदान देकर सोजा गांव की रक्षा की थी। आज सोजा गांव के श्री वीर वेलुड़ा सेवा मंडल के हर उम्र, हर जाति और हर वर्ग के लोग कंधे से कंधा मिलाकर सामाजिक समरसता का कार्य कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि एकता के बल पर सोजा गांव प्रधानमंत्री के 'विकास भी, विरासत भी' मंत्र को साकार कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने जिस प्रकार से काशी, उज्जैन, अयोध्या और सोमनाथ में विकास को विरासत के साथ जोड़ा है, उसी प्रकार सोजा गांव भी विकास और विरासत को आगे बढ़ा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस अर्धशताब्दी महोत्सव को और अधिक पवित्र बनाने के लिए श्रीमद् देवी भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ और शतचंडी महायज्ञ का भव्य आयोजन किया गया है। श्रीमद् देवी भागत पुराण मातृशक्ति का महान ग्रंथ है, जिसमें मां भगवती की महिमा का वर्णन किया गया है।

उन्होंने कहा कि देवी भागवत और शक्ति उपासना के साहित्य में माताजी के अनेक स्वरूप देखने को मिलते हैं। देवी भागवत का श्रवण करने से माता के स्वरूपों और पराक्रमों का ज्ञान मिलता है। साथ ही, शक्ति स्वरूपा माता के महत्व का बोध होने से समाज में स्त्रियों के प्रति सम्मान की भावना को भी बल मिलता है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ रहे देश का उल्लेख करते हुए मुख्यमंत्री ने सोजा गांव को स्वदेशी और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देकर आदर्श गांव बनने की प्रेरणा दी।

कथाकार श्री राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री जी ने मुख्यमंत्री को अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में सेवा मंडल के कार्यकर्ताओं तथा सरपंच श्रीमती सुशीलाबेन पटेल और मोहनभाई ने मुख्यमंत्री का अभिवादन किया।

इस अवसर पर विधायक श्री जे.एस. पटेल, अग्रणी श्री नारायणभाई पटेल, श्री गिरीशभाई पटेल, श्री प्रवीणभाई पटेल, श्री भाविनभाई पटेल, श्री घनश्यामसिंह वाघेला, श्री चंदुभाई पटेल, श्री अनिलभाई पटेल सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

पश्चिम रेलवे - अहमदाबाद मण्डल

अहमदाबाद मण्डल पर कैटरींग अनुबंध एवं MPS युनिट्स अनुबंध के लिए ई-निलामी

अहमदाबाद मण्डल पर कैटरींग युनिट्स अंतर्गत कैटरींग सेवाओं एवं मल्टी पर्पज स्टॉल अनुबंध के लिए ई-निलामी आमंत्रित की जाती है। विवरण निम्नानुसार दिये गए हैं।

कैटलॉग सं.	केटेगरी	ई-निलामी की तारीख एवं समय
ADI-CTG-10-25	केटरींग अनुबंध	सभी लोट्स के लिए ई-निलामी दिनांक: 26/11/2025 को 10:00 बजे प्रारंभ होगी।
ADI-MPS-06-25	MPS अनुबंध	सभी लोट्स के लिए ई-निलामी दिनांक: 26/11/2025 को 13:00 बजे प्रारंभ होगी।

नोट :- प्रस्तावित बिडर्स को IREPS वेबसाईट (www.ireps.gov.in) पर ई-निलामी लिजींग मोड्युल की मुलाकात लेने का अनुरोध किया जाता है। लॉट अनुसार विवरण उपर्युक्त कैटलॉग संख्या के अंतर्गत उपलब्ध है। प्रारंभिक कुलिंग ऑफ समयावधि 30 मिनट है. सफल लॉट बंद होने का मध्यांतर 10 मिनट है। लॉट-अनुसार बंद होनेका समय IREPS के लिजींग मोड्युल पर देखा जा सकेगा। ADI-194

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly • हमें फॉलो करें: x.com/WesternRly

फिर लौट रही है 'नीतीशे' सरकार — एग्जिट पोल्स में एनडीए को भारी बढ़त, महागठबंधन को झटका, बिहार में महिला वोटर फिर बने निर्णायक फैक्टर

(जीएनएस)। पटना। बिहार की राजनीति में एक बार फिर 'नीतीश युग' लौटने की संभावना जताई जा रही है। दोनों चरणों के मतदान के बाद जारी 17 अलग-अलग एजेंसियों के एग्जिट पोल्स के औसत नतीजों में एनडीए को स्पष्ट और आरामदायक बहुमत मिलता दिख रहा है। अगर ये अनुमान सही साबित होते हैं तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लगातार चौथी बार सत्ता पर काबिज होंगे और "फिर एक बार नीतीशे सरकार" का नारा हकीकत में बदल जाएगा।

इन पोल्स के मुताबिक एनडीए को 154 सीटें, महागठबंधन को 83 सीटें, और अन्य को 5 सीटें मिलने का अनुमान है। वहीं, प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी जो पहली बार विधानसभा चुनाव में उतरी, उसे केवल 3 से 5 सीटों का अनुमान मिला है। यह नतीजे बिहार के राजनीतिक समीकरणों को एक बार फिर बदलते हुए दिख रहे हैं, जहां नीतीश कुमार ने एक बार फिर महिला, ग्रामीण और पिछड़े तबकों के वोटों पर निर्णायक पकड़ बना ली है।

243 सीटों वाली विधानसभा में बहुमत का आंकड़ा 122 है, और एनडीए का यह अनुमानित प्रदर्शन उसे बहुमत से काफी आगे ले जाता है। यह न केवल एनडीए के लिए राहत भरी खबर है, बल्कि उन राजनीतिक विश्लेषकों के लिए भी चौंकाने वाला है जो मानते थे कि इस बार एंटी-इनकंबेंसी (विरोधी लहर) नीतीश के लिए चुनौती बनेगी।

इतिहास का सबसे ज्यादा मतदान — महिला वोटरों का निर्णायक प्रभाव

इस बार बिहार ने मतदान के नए रिकॉर्ड बनाए हैं। पहले चरण में 121 सीटों पर 65 प्रतिशत और दूसरे चरण में 122 सीटों पर 68.5 प्रतिशत मतदान हुआ — यह बिहार के चुनावी इतिहास में सबसे ऊंचा आंकड़ा है। चुनाव आयोग के आंकड़े बताते हैं कि इस बार महिलाओं की भागीदारी पुरुषों से अधिक रही, जो नीतीश कुमार के लिए शुभ संकेत है।

नीतीश कुमार का महिला वोट बैंक हमेशा से उनकी राजनीतिक नींव रहा है — चाहे शराबबंदी का कानून हो, पंचायतों में 50% आरक्षण या छात्राओं को साइकिल देने की योजना। इस बार भी मुख्यमंत्री महिला रोजगार योजना के तहत लाखों महिलाओं को 10-10 हजार रुपये की सहायता राशि सीधे उनके खातों में भेजी गई, जिसने वोटिंग पैटर्न को काफी प्रभावित किया।

राजनीतिक विशेषज्ञों का मानना है कि महिलाओं ने एक बार फिर "स्थिरता और सुरक्षा" के नाम पर नीतीश कुमार पर भरोसा जताया, जबकि विपक्ष के वादे उन्हें आश्वस्त नहीं कर सके।

महागठबंधन की मुश्किलें और लालू परिवार की चिंता

दूसरी ओर, महागठबंधन के लिए यह नतीजे चिंताजनक हैं। तेजस्वी यादव ने इस बार बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों पर आक्रामक चुनाव अभियान चलाया था, लेकिन नतीजों के अनुमान बताते हैं कि ग्रामीण और महिला वोटरों का बड़ा हिस्सा उनके साथ नहीं गया। कांग्रेस भी अपने पारंपरिक गढ़ों में कमजोर दिख रही है, जबकि वामदलों की हिस्सेदारी सीमित रही।

महागठबंधन का वोट प्रतिशत इस बार लगभग 36-38% के बीच रह सकता है, जबकि एनडीए का औसत वोट शेयर 43-44% तक पहुंचने का अनुमान है। यानी करीब 6% का अंतर ही सरकार के गठन को तय कर सकता है।

प्रशांत किशोर की 'जनसुराज'— अभी लंबा रास्ता बाकी

प्रशांत किशोर ने राजनीति में एक नया प्रयोग करते हुए "जनसुराज" आंदोलन के साथ सीधे मैदान में उतरने का फैसला किया था। उन्होंने दावा किया था कि जनता बदलाव चाहती है और पारंपरिक पार्टियों से थक चुकी है। लेकिन एग्जिट पोल्स के आंकड़े बताते हैं कि उनकी पार्टी राज्य स्तर पर प्रभाव छोड़ने में नाकाम रही।

हालांकि राजनीतिक विश्लेषक मानते हैं कि जनसुराज का वोट शेयर कुछ खास सीटों पर महागठबंधन को नुकसान पहुंचा सकता है, खासकर उन इलाकों में जहां पिछड़े और युवा वोटर्स की भूमिका निर्णायक थी।

एग्जिट पोल्स पर भरोसा कब तक?

बिहार के चुनावी इतिहास में एग्जिट पोल्स का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। 2015 में लगभग सभी सर्वेक्षणों ने एनडीए को बहुमत का अनुमान दिया था, जबकि परिणामों में महागठबंधन ने भारी जीत दर्ज की थी। वहीं 2020 में हालात उलटे रहे — पोल्स ने महागठबंधन को आगे दिखाया, लेकिन नतीजों में एनडीए ने 125 सीटें जीतकर सरकार बनाई।

इसलिए इस बार भी राजनीतिक विश्लेषक सावधानी बरतने की सलाह दे रहे हैं। उनका कहना है कि "बिहार का वोटर आखिरी पल तक अपने मन की बात जाहिर नहीं करता," और कई बार एग्जिट पोल्स उस सूक्ष्म सामाजिक गणित को पकड़ने में असफल रहते हैं जो बिहार की राजनीति को दिशा देता है।

फिर नीतीश कुमार की वापसी?

अगर यह अनुमान नतीजों में बदलते हैं, तो नीतीश कुमार एक बार फिर इतिहास रच देंगे — लगातार चौथी बार मुख्यमंत्री बनने वाले पहले नेता बनकर। उनकी सियासी यात्रा, जो 2005 में 'सुशासन बाबू' की छवि से शुरू हुई थी, अब एक बार फिर 'राजनीतिक स्थिरता के प्रतीक' के रूप में लौटती दिख रही है। बिहार के गांवों और कस्बों में "फिर एक बार नीतीशे सरकार" का नारा गूंज रहा है, लेकिन असली फैसला 16 नवंबर को मतगणना के दिन होगा, जब यह तय होगा कि जनता ने वाकई 'नीतीश कुमार' को फिर से चुना या यह सिर्फ एग्जिट पोल्स का भ्रम साबित होगा।

दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण के बीच सुप्रीम कोर्ट ने WHO मानक लागू करने से किया इनकार

(जीएनएस)। नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में बढ़ते वायु प्रदूषण के बीच देश की सर्वोच्च अदालत ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के वायु गुणवत्ता मानकों को तत्काल लागू करने की मांग को खारिज कर दिया है। अदालत ने कहा कि इस समय इस तरह के निर्देश देने की आवश्यकता नहीं है और मामला पहले से लंबित याचिकाओं में विचाराधीन है।

मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ के समक्ष सोमवार को एक वकील ने याचिका का उल्लेख करते हुए इसे मंगलवार, 12 नवंबर को सूचीबद्ध करने का अनुरोध किया था। याचिकाकर्ता की ओर से पेश वकील ने कहा कि उन्होंने दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से संबंधित लंबित मामलों में एक अंतरिम अर्जी दाखिल की है, जिसमें WHO के वायु गुणवत्ता दिशा-निर्देशों को लागू करने की मांग की गई है ताकि नागरिकों को जहरीली हवा से राहत मिल सके।

मुख्य न्यायाधीश ने पूछा कि यह याचिका किसने दायर की है। वकील ने बताया कि यह याचिका पर्यावरण कानून विशेषज्ञ एक अधिवक्ता द्वारा दायर की गई है। इस पर अदालत ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा कि "इस अदालत में ऐसे कई वकील हैं जो खुद को पर्यावरण कानून का विशेषज्ञ बताते हैं।" इसके बाद अदालत ने याचिका को अलग से सूचीबद्ध करने या तत्काल सुनवाई की आवश्यकता से इनकार कर दिया।

वकील ने यह भी आग्रह किया कि इस अर्जी को दिल्ली-एनसीआर प्रदूषण मामले में पहले से चल रहे एम.सी. मेहता बनाम भारत संघ केस के साथ जोड़ा जाए। इस पर अदालत ने कहा कि इस स्तर पर इसकी जरूरत नहीं है, क्योंकि मामला पहले से ही उसी दिशा में विचाराधीन है और वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (CAQM) इस पर लगातार रिपोर्ट दे रहा है।

उल्लेखनीय है कि सुप्रीम कोर्ट 12 नवंबर को दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण की स्थिति पर लंबित मामलों की सुनवाई करेगा। इससे पहले, 3 नवंबर को हुई सुनवाई में एमिकस क्यूरी ने अदालत को बताया था कि दिल्ली के कई हिस्सों में एयर मॉनिटरिंग स्टेशन काम नहीं कर रहे हैं, जिससे सटीक आंकड़े उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। अदालत ने तब CAQM को यह बताने का निर्देश दिया था कि अब तक प्रदूषण नियंत्रण के लिए कौन से कदम उठाए गए हैं और उनका क्या असर हुआ है।

राजधानी की हवा पिछले कुछ हफ्तों से लगातार 'गंभीर' श्रेणी में बनी हुई है। कई इलाकों में AQI 450 से ऊपर जा पहुंचा है, जिससे बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों के लिए हालात बेहद खतरनाक हो गए हैं। सरकार ने ग्रेडेड रिस्पांस एक्शन प्लान (GRAP) के तीसरे चरण के तहत कई सख्त कदम उठाए हैं, जैसे BS-3 पेट्रोल और BS-4 डीजल वाहनों पर प्रतिबंध, निर्माण कार्यों पर रोक और स्कूलों को ऑनलाइन कक्षाओं की अनुमति।

हालांकि, पर्यावरण विशेषज्ञों का कहना है कि केवल अदालतों और प्रशासनिक आदेशों से हालात में सुधार नहीं होगा। जब तक परिवहन व्यवस्था, औद्योगिक ढांचा और ऊर्जा स्रोतों को स्वच्छ विकल्पों में नहीं बदला जाएगा, तब तक दिल्ली की हवा हर सर्दी में इसी तरह जहरीली होती रहेगी। अदालत की सख्ती और सरकार के अस्थायी कदमों के बावजूद दिल्लीवासियों की सांसें फिलहाल धुएं और धुंध के बीच कैद हैं।

भारत में बनेगी देश की सबसे बड़ी बैटरी ऊर्जा भंडारण परियोजना, अडाणी समूह खावड़ा में करेगा निर्माण

(जीएनएस)। नई दिल्ली। भारत के ऊर्जा क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि की दिशा में कदम बढ़ाते हुए अडाणी समूह ने मंगलवार को घोषणा की कि वह गुजरात के खावड़ा क्षेत्र में देश की अब तक की सबसे बड़ी बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणाली (Battery Energy Storage System - BESS) परियोजना स्थापित करेगा। यह परियोजना न केवल भारत की, बल्कि दुनिया की सबसे बड़ी एकल-स्थान ऊर्जा भंडारण परियोजनाओं में से एक मानी जा रही है। कंपनी ने अपने बयान में कहा कि यह विशाल परियोजना 1,126 मेगावाट/3,530 मेगावाट-घंटे की क्षमता वाली होगी और मार्च 2026 तक पूरी तरह संचालन के लिए तैयार कर दी जाएगी। इस परियोजना में 700 से अधिक अत्याधुनिक BESS कंटेनर शामिल होंगे, जो खावड़ा नवीकरणीय ऊर्जा पार्क का हिस्सा होंगे। यही पार्क वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा नवीकरणीय ऊर्जा परिसर बनने की दिशा में तेजी से निर्माणाधीन है, जिसमें सौर और पवन ऊर्जा के संयोजन से हरित ऊर्जा उत्पादन किया जाएगा। अडाणी समूह के अनुसार, इस प्रणाली की विद्युत क्षमता 1,126 मेगावाट होगी, जबकि इसकी ऊर्जा भंडारण क्षमता 3,530 मेगावाट घंटे तक की होगी। इसका अर्थ यह है कि यह प्रणाली लगभग तीन घंटे तक अतिरिक्त 1,126 मेगावाट बिजली की आपूर्ति बनाए रख सकती है — जो नवीकरणीय ऊर्जा ग्रिड को स्थिरता और संतुलन प्रदान करने में अत्यंत सहायक होगी। जब सूर्यास्त के बाद सौर ऊर्जा उत्पादन घट जाता है या पवन गति कम हो जाती है, तब यह प्रणाली बिजली आपूर्ति को निर्बाध बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह परियोजना भारत की ऊर्जा नीति में एक क्रांतिकारी बदलाव लाने वाली मानी जा रही है। वर्तमान में देश तेजी से अक्षय ऊर्जा (Renewable Energy) की दिशा में बढ़ रहा है, और ऐसे में बड़े पैमाने पर ऊर्जा भंडारण प्रणालियाँ ही भविष्य के ऊर्जा ढांचे की आधारशिला बनेंगी। अडाणी समूह के चेयरमैन गौतम अडाणी ने इस परियोजना को भारत की ऊर्जा स्वतंत्रता के लिए एक निर्णायक कदम बताया। उन्होंने कहा, "ऊर्जा भंडारण ही अक्षय ऊर्जा आधारित भविष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता और आधारशिला है। यह परियोजना न केवल वैश्विक स्तर पर एक नया मानक स्थापित करेगी, बल्कि भारत के ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता के लक्ष्यों को भी मजबूती देगी। हमारा उद्देश्य है कि भारत स्वच्छ, विश्वसनीय और किफायती ऊर्जा समाधानों में आत्मनिर्भर बने।"

वेडिंग सीजन ने बढ़ाई बाजार की रौनक: सोना-चांदी के दामों में जबरदस्त उछाल, रिकॉर्ड स्तर पर पहुंची कीमतें

(जीएनएस)। नई दिल्ली। देश में शादी-ब्याह के सीजन की शुरुआत ने सर्राफा बाजारों में जबरदस्त हलचल मचा दी है। सोमवार को कारोबार की शुरुआत के साथ ही सोना और चांदी दोनों के भावों में तेज उछाल देखने को मिला। देशभर के प्रमुख बाजारों में सोना 1,670 से 1,820 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया, जबकि चांदी की कीमतों में 4,700 रुपये प्रति किलोग्राम तक की तेजी दर्ज की गई। दिल्ली, मुंबई, अहमदाबाद, चेन्नई और कोलकाता जैसे प्रमुख सर्राफा केंद्रों में 24 कैरेट सोने की कीमत अब 1,23,830 से 1,23,980 प्रति 10 ग्राम के बीच पहुंच गई है। वहीं 22 कैरेट सोना 1,13,510 से 1,13,660 प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहा है।

सबसे तेज उछाल दक्षिण भारत के बाजारों में देखा गया, खासकर चेन्नई में, जहां सोना 2,970 से 3,240 प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया। चांदी ने भी रिकॉर्ड तोड़ प्रदर्शन किया है और दिल्ली के सर्राफा बाजार में इसका भाव 1,57,100 प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया है। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार, इस तेजी के पीछे दो प्रमुख कारण हैं — पहला, शादी-ब्याह के मौसम में बढ़ी हुई घरेलू मांग और दूसरा, अंतरराष्ट्रीय बाजारों में सोने-चांदी के दामों में जारी तेजी। दिल्ली में सोमवार को 24 कैरेट सोना 1,23,980 प्रति 10 ग्राम, जबकि 22 कैरेट सोना 1,13,660 प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहा है। मुंबई और अहमदाबाद में भी दामों में उछाल जारी है, जहां 24 कैरेट सोना क्रमशः 1,23,830 और 1,23,880 प्रति 10 ग्राम के भाव पर बिक रहा है।दक्षिण भारत में भी सर्राफा कारोबार में भारी तेजी देखी जा रही है। चेन्नई में 24 कैरेट सोना 1,25,250 प्रति 10 ग्राम तक पहुंच गया, जबकि 22 कैरेट सोना 1,14,810 प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है। बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर जैसे शहरों में भी 24 कैरेट सोना 1,23,830 प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रहा है, जो बीते सप्ताह की तुलना में लगभग 1,500 अधिक है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सोना और चांदी की कीमतों में तेजी बनी हुई है। विश्लेषकों का कहना है कि डॉलर की कमजोरी और अमेरिका में मुद्रास्फीति से जुड़ी अनिश्चितता ने निवेशकों को एक बार फिर सुरक्षित निवेश के रूप में सोने की ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि विदेशी बाजारों में सोने के भाव 2,400 डॉलर प्रति औंस के स्तर के करीब पहुंच गए हैं।

इलाहाबाद हाईकोर्ट में न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन ने संभाली जिम्मेदारी

(जीएनएस)। प्रयागराज। इलाहाबाद उच्च न्यायालय में मंगलवार को न्यायिक व्यवस्था को और मजबूती मिली, जब न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन ने न्यायाधीश पद की शपथ ली। उन्हें मुख्य न्यायाधीश अरुण भंसाली ने शपथ दिलाई। इस नियुक्ति के साथ ही अब इलाहाबाद उच्च न्यायालय में कार्यरत न्यायाधीशों की संख्या 110 हो गई है, जबकि स्वीकृत पदों की संख्या 160 है।

न्यायमूर्ति श्रीधरन इससे पूर्व मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में कार्यरत थे। उनका स्थानांतरण 19 अक्टूबर को केंद्र सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के माध्यम से किया गया था। गौरतलब है कि सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने पहले उन्हें छत्तीसगढ़ हाईकोर्ट भेजने की सिफारिश की थी, लेकिन केंद्र सरकार के सुझाव पर 14 अक्टूबर को कॉलेजियम ने अपने प्रस्ताव में संशोधन करते हुए उन्हें इलाहाबाद उच्च न्यायालय भेजने की मंजूरी दी।

विधिक अनुभव और न्यायिक पृष्ठभूमि

न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन का जन्म 24 मई 1966 को हुआ था। उन्होंने अपने विधिक करियर की शुरुआत वर्ष 1992 में सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल सुब्रमण्यम के चैंबर से की। वर्ष 1997 तक वे सुप्रीम कोर्ट, दिल्ली हाईकोर्ट और ट्रायल कोर्ट में अनेक जटिल सिविल व आपराधिक मामलों पर कार्य करते रहे। इसके बाद उन्होंने स्वतंत्र रूप से दिल्ली में वकालत शुरू की और 2001 में इंदौर स्थानांतरित होकर मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर पीठ में प्रैक्टिस जारी रखी।

उन्होंने आपराधिक, सिविल, सेवा और उपभोक्ता मामलों में विशेषज्ञता हासिल की। वर्ष 2001 से 2003 तक वे मध्य प्रदेश राज्य के पैनल अधिवक्ता रहे और बाद में राज्य सरकार के सरकारी अधिवक्ता के रूप में भी सेवाएं दीं।

न्यायमूर्ति श्रीधरन की नियुक्ति से इलाहाबाद उच्च न्यायालय में न केवल न्यायिक कार्यप्रणाली को बल मिलेगा बल्कि उनके व्यापक अनुभव से न्यायिक प्रशासन में नयी ऊर्जा और दृष्टि का संचार होने की उम्मीद है।

अयोध्या फिर रचेगा इतिहास: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य शिखर पर ध्वजारोहण, सातों शिखरों पर लहराएगा भगवा ध्वज, पूरी अयोध्या बनेगी भक्ति का सागर

(जीएनएस)। अयोध्या। भव्य राममंदिर में श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा के बाद अब अयोध्या एक बार फिर इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में अपना नाम दर्ज कराने जा रही है। आने वाली 25 नवंबर की सुबह वह क्षण लेकर आएगी जिसका इंतजार न सिर्फ अयोध्या, बल्कि पूरे भारतवर्ष के करोड़ों श्रद्धालु वर्षों से कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वयं श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के 161 फीट ऊंचे मुख्य शिखर पर भगवा ध्वज फहराएंगे। यह पहली बार होगा जब मंदिर के सातों शिखरों पर एक साथ भगवा ध्वज लहराएगा, और पूरा अयोध्या ध्वजारोहण के इस अलौकिक दृश्य का साक्षी बनेगा।

यह आयोजन केवल एक धार्मिक समारोह नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक माना जा रहा है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद जब रामलला के चरणों में भक्ति का सागर उमड़ा था, अब उसी पवित्र भूमि पर यह ध्वजारोहण भारत की सनातन परंपरा, संस्कृति और राष्ट्रीय अस्मिता का भव्य उत्सव बनेगा। इस आयोजन को लेकर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ स्वयं लगातार तैयारियों की निगरानी कर रहे हैं। उनके निर्देश पर राज्य के वरिष्ठ अधिकारी, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारी और सुरक्षा एजेंसियां मिलकर कार्यक्रम की प्रत्येक बारीकी पर नज़र रख रही हैं।

अयोध्या में तैयारियों का स्तर अभूतपूर्व बताया जा रहा है। मंदिर परिसर को दिव्य और भव्य सजावट से सजाया जा रहा है। भगवा और सुनहरे रंगों की छटा चारों ओर बिखर रही है। मंदिर के सातों शिखरों पर विशेष यंत्रों की मदद से ध्वज फहराने की व्यवस्था की जा रही है, ताकि प्रत्येक ध्वज पूर्ण श्रद्धा के साथ ऊंचाई पर फहराया जा सके। आयोजन की रूपरेखा में सुरक्षा, दर्शन व्यवस्था, यातायात और श्रद्धालुओं की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।

इस भव्य कार्यक्रम को देश-विदेश के करोड़ों लोग लाइव देख सकेंगे। दूरदर्शन और प्रमुख राष्ट्रीय समाचार चैनलों के साथ-साथ सभी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर इस आयोजन का सीधा प्रसारण किया जाएगा। श्रीराम जन्मभूमि परिसर में 200 फीट चौड़ी विशाल एलईडी स्क्रीन लगाई जाएगी, जिससे हजारों श्रद्धालु एक साथ इस ऐतिहासिक क्षण को देख सकें। इसके अलावा पूरे अयोध्या में लगभग 30 से अधिक प्रमुख स्थलों — जैसे रामपथ तिराहा, रिकाबगंज, लता मंगेशकर चौक, राम की पैड़ी, हनुमानगढ़ी, कनक भवन और सहादतगंज — पर भी बड़ी-बड़ी स्क्रीनें लगाई जा रही हैं, ताकि कोई भी श्रद्धालु इस दृश्य से वंचित न रहे।

अयोध्या का स्वरूप इन दिनों पूरी तरह बदल चुका है। शहर की हर गली, हर द्वार, हर मंदिर दीपों, पुष्पों और रोशनी से नहा रहा है। ध्वजारोहण के दिन अयोध्या दीपोत्सव से भी अधिक आलोकित होगी। नगर के प्रमुख प्रवेश द्वारों, मंदिरों और गलियों को रंग-बिरंगी लाइटिंग, फूलों की मालाओं और तोरणद्वारों से सजाया जा रहा है। अयोध्या के आसमान में उस दिन दीपों और आतिशबाजी की चमक एक साथ दिखाई देगी, मानो स्वयं देवता इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बन उतर आए हों।

भक्ति और संस्कृति का संगम रचने के लिए 21 से 25 नवंबर तक एक भव्य सांस्कृतिक श्रृंखला आयोजित की जा रही है। इसमें रामकथा, भजन संध्या, नृत्य-नाट्य, वेदपाठ, कथा प्रवचन और देशभर के प्रतिष्ठित कलाकारों की प्रस्तुतियां शामिल होंगी। अयोध्या में रामभक्ति का वातावरण अपने चरम पर होगा, जहां मंदिर परिसर से लेकर सरयू किनारे तक भक्ति की गूंज सुनाई देगी।

यह आयोजन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारत की आत्मा के उत्सव का प्रतीक बन गया है। श्रीराम जन्मभूमि मंदिर का ध्वजारोहण यह संदेश देगा कि भारत की सांस्कृतिक चेतना आज भी अडिग, जागृत और विश्व को आलोकित करने के लिए तत्पर है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भगवा ध्वज फहराएंगे, तब यह केवल एक ध्वज का आरोहण नहीं होगा, बल्कि यह उस गौरव, उस संघर्ष और उस आस्था का सम्मान होगा जिसने सदियों की प्रतीक्षा के बाद एक युग का साक्षात्कार कराया है।

25 नवंबर का दिन आने वाले युगों के लिए स्मरणीय बन जाएगा, जब अयोध्या की धरती पर फिर एक बार इतिहास स्वयं को दोहराएगी और पूरी दुनिया यह देखेगी कि "जहाँ-जहाँ राम हैं, वहाँ-वहाँ प्रकाश है।"

अहमदाबाद में छत्तीसगढ़ को मिला 33,000 करोड़ रुपये से अधिक का निवेश, मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा – गुजरात और छत्तीसगढ़ मिलकर बनाएंगे विकसित भारत का नया मॉडल

(जीएनएस)। अहमदाबाद। देश की औद्योगिक राजधानी कहे जाने वाले अहमदाबाद में मंगलवार को छत्तीसगढ़ ने अपने विकास का एक नया अध्याय लिखा। यहां आयोजित इन्वेस्टर कनेक्ट मीट में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने देश के शीर्ष उद्योगपतियों और व्यापारिक नेताओं से मुलाकात कर निवेश की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा की। इस आयोजन में छत्तीसगढ़ को 33,000 करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं, जो राज्य की औद्योगिक प्रगति और निवेश आकर्षण क्षमता का स्पष्ट संकेत हैं। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि वे गुजरात की इस पवित्र भूमि पर आकर स्वयं को अत्यंत प्रेरित महसूस कर रहे हैं, क्योंकि यह राज्य उद्यम, नवाचार और औद्योगिक विकास का प्रतीक है। उन्होंने मंच से कहा, "गुजरात के कण-कण में उद्योग बसता है, और कोई ऐसा कोना नहीं जहाँ गुजराती भाइयों की मेहनत और व्यापार की छाप न हो। अब समय आ गया है कि गुजरात और छत्तीसगढ़ मिलकर विकसित भारत की नई औद्योगिक कहानी लिखें।" मुख्यमंत्री ने बताया कि छत्तीसगढ़ आज ऊर्जा, खनिज, जनशक्ति और उद्योग के अनुकूल माहौल से परिपूर्ण है। राज्य में उद्योगों के लिए नीति सरल, पारदर्शी और प्रोत्साहनकारी है। बीते 22 महीनों में राज्य सरकार ने 350 से अधिक सुधार लागू किए हैं, जिससे निवेशकों के लिए प्रक्रियाएं काफी सुगम हो गई हैं। सिंगल विंडो सिस्टम के तहत अब एनओसी और अनुमति त्वरित गति से जारी की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति में निवेशकों को विशेष अनुदान, कर छूट और बुनियादी सुविधाओं के रूप में आकर्षक पैकेज दिए जा रहे हैं।

मुख्यमंत्री साय ने बताया कि राज्य में अब तक 7.5 लाख करोड़ से अधिक के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हो चुके हैं, जबकि हाल ही में आयोजित एनर्जी समिट में ही 3.5 लाख करोड़ के निवेश प्रस्ताव मिले। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ कोयला उत्पादन में देश का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है और यहां थर्मल, हाइडल, सोलर व बायो-एनर्जी उद्योगों की अपार संभावनाएं हैं। साथ ही बस्तर और सरगुजा जैसे जनजातीय इलाकों में उद्योग स्थापित करने वालों को अतिरिक्त सहायता और रियायतें दी जाएंगी।

साय ने बताया कि राज्य की राजधानी नवा रायपुर को आईटी और एआई डेटा सेंटर हब के रूप में विकसित किया जा रहा है। देश-विदेश की बड़ी सेमीकंडक्टर और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियां यहां निवेश में रुचि दिखा रही हैं। इसके साथ ही राज्य सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया है, जिससे हॉस्पिटैलिटी, वेलनेस और धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में निवेश की नई राहें खुल रही हैं। इस कार्यक्रम में सीएसआईडीसी के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल, मुख्यमंत्री के मुख्य सचिव सुबोध कुमार सिंह, उद्योग सचिव रजत कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव राहुल भगत, और सीएसआईडीसी के प्रबंध संचालक विश्वेश कुमार सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि गुजरात और छत्तीसगढ़ दोनों राज्यों के बीच आर्थिक व औद्योगिक सहयोग की असीम संभावनाएं हैं। गुजरात के पास अनुभव, उद्यमिता और औद्योगिक नेटवर्क है, जबकि छत्तीसगढ़ के पास प्रचुर प्राकृतिक संसाधन, ऊर्जा और नीति आधारित समर्थन है। दोनों मिलकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

निवेश की घोषणाओं से छत्तीसगढ़ में नई औद्योगिक ऊर्जा का संचार

अहमदाबाद इन्वेस्टर कनेक्ट मीट में अनेक कंपनियों ने छत्तीसगढ़ में निवेश की घोषणा की —

1.लीजियम लाइफ साइंसेस प्राइवेट लिमिटेड ने फार्मास्यूटिकल और मेडिकल फूड सप्लीमेंट निर्माण इकाई के लिए 101 करोड़ का निवेश प्रस्ताव रखा है, जिससे 750 रोजगार सृजित होंगे।

2.टोरेंट पावर लिमिटेड, अहमदाबाद ने 22,900 करोड़ की लागत से 1600 मेगावाट थर्मल पावर प्लांट लगाने का प्रस्ताव दिया है। इससे 5000 से अधिक रोजगार के अवसर बनेंगे और छत्तीसगढ़ की ऊर्जा क्षमता को नई दिशा मिलेगी।

3.टोरेंट फार्मास्युटिकल लिमिटेड ने 200 करोड़ के निवेश से नई दवा निर्माण इकाई की योजना बताई है, जिससे 200 लोगों को रोजगार मिलेगा।

4.ओनिक्स थ्री एनर्सोल प्राइवेट लिमिटेड ने ग्रीन हाइड्रोजन, ग्रीन अमोनिया और ग्रीन स्टील मैन्युफैक्चरिंग प्लांट के लिए 9,000 करोड़ के निवेश का प्रस्ताव दिया है, जिससे 4,082 लोगों को रोजगार मिलेगा।

5.माला क्रिएशन प्राइवेट लिमिटेड, सूरत ने 2GW क्षमता वाले सोलर सेल निर्माण यूनिट के लिए 700 करोड़ के निवेश की घोषणा की है, जिससे 500 रोजगार पैदा होंगे।

6.मल्टी सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल की स्थापना के लिए 300 करोड़ का निवेश प्रस्तावित है, जो स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करेगा और स्थानीय स्तर पर रोजगार बढ़ाएगा।

7.सफायर सेमीकॉम प्राइवेट लिमिटेड ने सेमीकंडक्टर निर्माण इकाई के लिए 120 करोड़ निवेश का प्रस्ताव दिया है, जिससे 4000 रोजगार सृजन होंगे।

इन निवेश प्रस्तावों से न केवल छत्तीसगढ़ के औद्योगिक परिदृश्य में नई ऊर्जा आएगी, बल्कि राज्य में 10,532 से अधिक प्रत्यक्ष रोजगार के अवसर उत्पन्न होंगे।

अहमदाबाद में हुए इस कार्यक्रम ने यह साबित कर दिया कि छत्तीसगढ़ अब सिर्फ खनिज और ऊर्जा का राज्य नहीं, बल्कि भारत के उभरते हुए औद्योगिक पावरहाउस के रूप में अपनी पहचान बना रहा है।

दिल्ली धमाके के बाद उत्तर प्रदेश में हाई अलर्ट, सभी जिलों में सघन चेकिंग अभियान शुरू, सुरक्षा एजेंसियां सतर्क मोड में

(जीएनएस)। लखनऊ। दिल्ली के लाल किले के पास सोमवार शाम हुए भीषण धमाके के बाद पूरे उत्तर प्रदेश में सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट मोड में आ गई हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश के बाद राज्य पुलिस, एटीएस, एसटीएफ और खुफिया विभाग सहित सभी सुरक्षा इकाइयों को हाई अलर्ट पर रखा गया है। राजधानी लखनऊ से लेकर अयोध्या, मथुरा, वाराणसी और कानपुर जैसे प्रमुख धार्मिक व औद्योगिक शहरों में सघन तलाशी और चेकिंग अभियान शुरू कर दिया गया है।

राजधानी लखनऊ में मंगलवार की सुबह पुलिस की अभूतपूर्व सक्रियता देखने को मिली। डीसीपी पश्चिम विश्वजीत श्रीवास्तव के नेतृत्व में एडीसीपी और एसीपी कैसरबाग व बाजारखाला के साथ भारी पुलिस बल ने चारबाग क्षेत्र में फ्लैग मार्च निकाला। बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, मेट्रो स्टेशन और आसपास के होटल व लॉज की बारीकी से जांच की गई। सुरक्षा एजेंसियों ने डॉग स्क्वॉड और बम निरोधक दस्ते (BDDS) को भी तलाशी में लगाया। चारबाग, हजरतगंज, आलमबाग और हुसैनगंज जैसे भीड़भाड़ वाले इलाकों में वाहनों की चेकिंग की गई और संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गई।

अयोध्या, वाराणसी, मथुरा और कानपुर जैसे धार्मिक और संवेदनशील शहरों में भी सुरक्षा व्यवस्था को पूरी तरह कड़ा कर दिया गया है। पुलिस और स्थानीय प्रशासन ने सभी प्रमुख रेलवे स्टेशन, बस अड्डे, होटल और धर्मशालाओं में सघन तलाशी अभियान शुरू किया है। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि परिसर, हनुमानगढ़ी, राम की पैड़ी और अन्य धार्मिक स्थलों पर विशेष निगरानी रखी जा रही है। वहीं वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर और दशाश्वमेध घाट पर पुलिस की तैनाती बढ़ाई गई है। मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि और द्वारकाधीश मंदिर के आसपास चौकसी के लिए अतिरिक्त फोर्स लगाई गई है।

उत्तर प्रदेश की नेपाल सीमा से सटे जिलों — सिद्धार्थनगर, महाराजगंज, बलरामपुर, श्रावस्ती और बहराइच — में सुरक्षा और कड़ी कर दी गई है। सीमावर्ती क्षेत्रों में एसएसबी और स्थानीय पुलिस की संयुक्त टीमें चौकसी में जुटी हैं। सीमा पार से किसी भी संदिग्ध आवाजाही या सामग्री की घुसपैठ पर तुरंत कार्रवाई के निर्देश दिए गए हैं।

पुलिस महानिदेशक राजीव कृष्ण ने सभी जिलों के पुलिस कप्तानों को निर्देश दिया है कि पूरे प्रदेश में हाई अलर्ट की स्थिति बनाए रखें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना पर तुरंत कार्रवाई करें। डीजीपी ने यह भी कहा कि सभी जिलों में सघन चेकिंग अभियान, नाइट पेट्रोलिंग और इंटेलिजेंस सर्विलांस लगातार जारी रहना चाहिए।

सूत्रों के अनुसार, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सुरक्षा एजेंसियों को निर्देश दिया है कि किसी भी कीमत पर प्रदेश में शांति और कानून-व्यवस्था बनी रहनी चाहिए। उन्होंने कहा कि दिल्ली धमाके के बाद पूरे उत्तर भारत में सुरक्षा का स्तर बढ़ाया गया है और उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से धार्मिक स्थलों, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों, बाजारों और भीड़भाड़ वाले इलाकों पर कड़ी निगरानी रखी जाए।

राज्य के सभी पुलिस महानिरीक्षक (IG), उपमहानिरीक्षक (DIG) और जिलाधिकारी (DM) अपने-अपने क्षेत्रों में चौकसी बढ़ाने में लगे हैं।